LLF Language and Learning foundation
Strong Foundation, Stronger Future

unicef for every child

बहुभाषी शिक्षा की योजना बनाने और क्रियान्वयन के लिए रोडमैप

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और निपुण भारत मिशन

एप्रोच पेपर

(सितम्बर 2020)

डॉ. धीर झिंगरन

(नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) के विकास के लिए शिक्षा मंत्रालय द्वारा गठित राष्ट्रीय संचालन समिति के सदस्य)

© लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन
इस संदर्शिका या इसके किसी अंश का किसी भी तरह प्रकाशन, वितरण या पुनः प्रकाशन लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन की लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

विषय सूची

	पृ.सं.
शब्दावली	1
अध्याय-1: बहुभाषी दृष्टिकोण के आधार पर बच्चों के घर की भाषा को शामिल करने के सिद्धांत	3
1. सीखने में भाषा की क्या भूमिका है?	3
2. बच्चों के लिए उनकी मजबूत भाषा (L1) के माध्यम से सीखने का क्या महत्व है?	3
3. भाषा विकास से संबंधित कुछ सामान्य भ्रांतियाँ क्या हैं?	7
4. बहुभाषी शिक्षण क्यों जरूरी है?	9
5. हमारे देश के लिए उपयुक्त बहुभाषी शिक्षा के सिद्धांत क्या हैं?	10
अध्याय-2: कक्षाओं में विविध भाषायी परिस्थितियाँ	12
1. किन बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में मध्यम से गंभीर स्तर की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?	12
2. शिक्षण के उपयुक्त तरीकों का निर्णय लेने हेतु भाषायी परिस्थितियों की पहचान और वर्गीकरण किस प्रकार किया जा सकता है?	13
अध्याय-3: द्विभाषी/बहुभाषी शिक्षा: बच्चों की परिचित भाषाओं को सम्मिलित करने की रणनीतियाँ	15
1. बच्चों के घर की भाषा को शामिल करने के विभिन्न तरीके कौन-कौन से हैं?	15
2. दूसरी भाषा सीखने-सिखाने के लिए बच्चों के लिए मददगार कुछ अच्छी रणनीतियाँ कौन-सी हैं?	24
3. बच्चों के अंग्रेजी सीखने की उनके पालकों की आकांक्षाओं को हम किस प्रकार संबोधित करें?	25
अध्याय-4: बच्चों के घर की भाषाओं को शामिल करने हेतु राज्य स्तरीय नीति और क्रियान्वयन के लिए अगले 12 महीनों में की जाने वाली पहल	27
1. बच्चों के घर की भाषाओं को शामिल करने के लिए नीतिगत पहल के कुछ उदाहरण क्या हो सकते हैं?	27
2. क्रियान्वयन की कुछ अल्पकालिक प्राथमिकताएँ क्या हैं?	29
अध्याय-5: बहुभाषी शिक्षा की तैयारी के लिए योजना	34

शब्दावली

प्रथम भाषा (L1): यह वह भाषा है, जिसे पूर्व–प्राथमिक या प्राथमिक स्कूल में प्रवेश लेते समय बच्चे अच्छी तरह से जानते हैं अर्थात् समझते हैं और बोलते हैं। प्राय: यह मातृभाषा या घर में सीखी गई पहली भाषा होती है। हम प्रथम भाषा/सशक्त भाषा/घर की भाषा का उपयोग एक ही अर्थ में करेंगे। बच्चे की प्रथम भाषा को दर्शाने के लिए हम इसे संक्षिप्त रूप में L1 लिखेंगे। बच्चे की L1 के उदाहरण में स्थानीय/क्षेत्रीय भाषाएँ जैसे संबलपुरी, वागड़ी या टुलु या शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग की जाने वाली राज्य की आधिकारिक भाषा जैसे तमिल, गुजराती या ओड़िया शामिल हैं।

द्वितीय (L2) और तृतीय भाषा (L3): ये ऐसी अतिरिक्त भाषाएँ हैं, जिनसे पूर्व–प्राथमिक/प्राथमिक शाला में प्रवेश के समय बच्चे कम परिचित होते हैं। ये वे भाषाएँ हैं, जिन्हें बच्चे समझना और बोलना सीख रहे होते हैं। एक बच्चा जो केवल घर की भाषा या स्थानीय भाषा जानता है, उसके लिए क्षेत्रीय भाषा या राज्य की आधिकारिक भाषा, दूसरी भाषा हो सकती है। उदाहरण के लिए छत्तीसगढ़ में गोंडी भाषा बोलने वाले बच्चे के लिए मानक हिन्दी, कर्नाटक में शोलीगा (शोलागा) भाषा बोलने वाले बच्चे के लिए कन्नड़ा, आंध्र प्रदेश की सीमा से लगे दक्षिण ओडिसा के मलकानगिरी और कोरापुट जिलों में रहने वाले बच्चों के लिए ओडिया भाषा, जिनकी घर की भाषा तेलगु है, मध्यप्रदेश के रीवा जिखले के बघेली बोलने वाले बच्चे के लिए हिन्दी भाषा आदि। छोटे बच्चों को स्कूल के बाहर, घर में या बाजार में द्वितीय भाषा के उपयोग के सीमित अवसर मिलते हैं।

तीसरी भाषा: प्राय: ऐसी भाषा होती है, जिससे बच्चा सबसे कम परिचित होता है। स्कूल में प्रवेश लेते समय उसे इस भाषा की कुछ भी समझ नहीं होती है। स्कूल के बाहर भी बच्चे को इस भाषा के उपयोग के बहुत ही सीमित अवसर मिलते हैं। भारत के अधिकांश बच्चों के लिए अंग्रेजी तीसरी भाषा होगी। त्रि–भाषा फॉर्मूले के अंतर्गत स्कूल में पढ़ाई जाने वाली तीसरी भारतीय भाषा भी इस श्रेणी में आएगी।

शिक्षा का माध्यम (MoI): MoI वह भाषा है, जिसका उपयोग आधिकारिक रूप से पाठ्यपुस्तकों, अन्य सीखने–सिखाने की सामग्रियों और आकलन में किया जाता है। भाषायी विविधता वाले राज्य या मेट्रो शहर बहुत सी भाषाओं का शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग करते हैं। बहुत से स्कूलों में बच्चों को पाठ्यपुस्तक की विषय–वस्तु समझाने और आपसी बातचीत के लिए शिक्षक एक अलग स्थानीय / क्षेत्रीय भाषा का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, बिहार के पूर्णिया जिले में शिक्षक सुरजापुरी भाषा का प्रयोग करते हैं, जबकि वहाँ शिक्षा का माध्यम मानक हिन्दी है।

एक भाषा के भिन्न रूप: अधिकांश भाषाओं के भिन्न–भिन्न रूप होते हैं, जिन्हें प्राय: बोलियाँ कहा जाता है और ये एक राज्य के अलग–अलग हिस्सों या पूरे राज्य में बोली जाती है। उदाहरण के लिए गोंडी भाषा के मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश राज्यों में बहुत से रूप हैं। छत्तीसगढ़ में ही गोंडी भाषा के कम से कम तीन रूप हैं। किसी एक क्षेत्र में बोली जाने वाली तमिल भाषा पाठ्यपुस्तकों में लिखित रूप में उपयोग की जाने वाली भाषा से अलग हो सकती है।

भाषाओं के बीच की भाषायी दूरी: सरल शब्दों में कहें तो इसका अर्थ है कि दो भाषाएँ एक–दूसरे से कितनी अलग हैं। क्या एक भाषा बोलने वाले दूसरी भाषा बोलने वालों को समझते हैं? क्या कुछ ऐसे शब्द हैं, जो दोनों भाषाओं में उपलब्ध हैं? यदि भाषाएँ पूर्ण रूप से असंबंधित हैं, जैसे- हिन्दी और अंग्रेजी, तब वे भाषायी रूप से दूर होती हैं।

प्रभावशाली भाषा: ऐसी भाषाएँ, जो आधिकारिक रूप से उपयोग की जाती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में ये भाषाएँ शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग की जाती हैं। यह एक क्षेत्रीय भाषा या राज्य की भाषा और अंग्रेजी जैसी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा हो सकती है। यह भाषा व्यापक रूप से संप्रेषण के लिए उपयोग की जाती है और रोजगार के लिए महत्वपूर्ण होती है।

अप्रभावशाली भाषा: ऐसी भाषाएँ, जो औपचारिक रूप से उपयोग नहीं की जाती हैं और शिक्षा के लिए उपयुक्त नहीं मानी जाती हैं। ऐसी भाषाएँ लिखित या अलिखित हो सकती हैं।

अध्याय–1

बहुभाषी दृष्टिकोण के आधार पर बच्चों के घर की भाषा को शामिल करने के सिद्धांत

1. सीखने में भाषा की क्या भूमिका है?

- शिक्षा में भाषा सब कुछ नहीं है, परन्तु बिना भाषा के शिक्षा में सब कुछ, कुछ भी नहीं है।
- बच्चे जब भाषा सीखते हैं, तब वे बहुत सारे विकल्पों में से सिर्फ एक चीज नहीं सीख रहे होते हैं, बल्कि वे सीखने का आधार सीख रहे होते हैं।

चित्र 1: भाषा के कार्य

स्कूली शिक्षा में सभी प्रकार का सीखना भाषा के माध्यम से होता है, चाहे बच्चा शिक्षक से बातचीत या संवाद कर रहा हो, विचार कर रहा हो, दूसरे बच्चों के साथ मिलकर काम कर रहा हो, पढ़ रहा हो, या लिख रहा हो। (चित्र–1)

2. बच्चों के लिए मजबूत भाषा (L1) के माध्यम से सीखने का क्या महत्व है?

2.1 बेहतर समझ और सीखना

2.2 अन्य भाषाएँ सीखने में सहयोग

2.3 आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाता है

2.4 कक्षा में संवाद बढ़ाता है और यह बाल–केन्द्रित होती है

2.5 रचनात्मकता, अभिव्यक्ति, उच्च स्तरीय चिंतन और तर्क करने की क्षमता का विकास होता है

2.6 बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN) के लिए परिचित भाषा का प्रयोग सहयोग करता है

आइए, अब इन्हें एक–एक कर विस्तार से समझते हैं:

2.1 बेहतर समझ और सीखना

यह आसानी से समझा जा सकता है और ऐसे शोध भी हुए हैं, जिनके परिणाम दर्शाते हैं कि बच्चे की घर की भाषा का शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग करने से अवधारणाओं और कौशलों की अच्छी समझ विकसित होती है। यह सभी विषयों के सीखने के प्रतिफलों को बेहतर बनाने में भी सहायक है। पूरी दुनिया में शोध–आधारित सहमति है कि जो बच्चे एक परिचित भाषा के माध्यम से पढ़ते हैं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि उन बच्चों से अधिक होती है, जिन्हें एक अपरिचित भाषा जैसे अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाया जाता है।[1] बुनियादी स्तर पर छोटे बच्चे मुख्यत: एक–दूसरे से और बड़ों से बातचीत करके सीखते हैं, क्योंकि उनके लिए सीखना एक सामाजिक गतिविधि है। वह स्थिति बाद में आती है, जब वे पढ़कर और लिखकर स्वयं सीखते हैं। इस स्थिति में बोलने की स्वतंत्रता और कक्षा में विस्तारित बातचीत करना सीखने का सबसे अच्छा तरीका है। यह केवल तभी संभव है, जब बच्चों की मजबूत भाषाओं को प्रोत्साहन दिया जाए और कक्षा में उनका उपयोग किया जाए।

पढ़ाई और लिखाई बातचीत के सागर पर ही तैरते हैं। (ब्रिट्टन, 1970)

2.2. अन्य भाषाएँ सीखने में सहयोग

भाषाएँ एक–दूसरे के साथ (अंतर्संबंधित तरीके से) विकसित होती हैं, एक भाषा में बनी मजबूत बुनियाद अन्य भाषाएँ सीखने में सहायक होती हैं। यदि बच्चों का उनकी परिचित भाषा में मौखिक भाषा और साक्षरता कौशलों का मजबूत आधार है तो वे बेहतर रूप से अन्य भाषाएँ सीख सकते हैं।

2.3 आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाता है जो सीखने में सहायक होता है

बच्चों की भाषा, संस्कृति और पहचान आपस में जुड़े होते हैं। बच्चों की घर की भाषा के उपयोग से उनमें स्वयं की सकारात्मक छवि और आत्मविश्वास का विकास होता है। इस प्रकार का सकारात्मक वातावरण प्रारंभिक वर्षों में सीखने के लिए महत्वपूर्ण होता है।

---

[1] इथोपिया में जिन बच्चों ने अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त की, उन्होंने कक्षा–10 में गणित, जीवविज्ञान, रसायनशास्त्र और भौतिकी आदि विषयों में उन बच्चों से कहीं बेहतर प्रदर्शन किया, जिनकी पढ़ाई मातृभाषा के माध्यम से नहीं हुई थी (Heugh et al, 2007)। उन विद्यार्थियों के औसत अंक सबसे अधिक थे, जिन्होंने 8 वर्षों तक मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाई की थी, इसके बाद उनके अंक थे, जिन्होंने 6 वर्षों तक मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाई की थी। जिन विद्यार्थियों ने केवल 4 वर्षों तक मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाई की थी, उनके अंक कम थे परन्तु उनसे अधिक थे, जिन्होंने मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाई नहीं की थी। इसी तरह के परिणाम अमेरिका के 15 राज्यों में किए गए एक बड़े अध्ययन में भी देखने को मिले (Thomas and Collier, 1997)। इस अध्ययन में मुख्य रूप से यह बात निकलकर सामने आई कि बच्चों की शैक्षिक सफलता का सबसे महत्वपूर्ण कारक यह है कि अधिक से अधिक वर्षों तक बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा के अवसर मिलें। भारत में किए गए छोटे स्तर के अध्ययन भी इसी प्रकार के परिणाम दर्शाते हैं।

बच्चों को स्कूल में जब सीधे–सीधे या परोक्ष रूप से यह संदेश दिया जाता है कि 'अपनी भाषा और संस्कृति को स्कूल के दरवाजे पर छोड़ दें', तो बच्चे अपनी पहचान स्कूल के दरवाजे पर छोड़ देते हैं। बच्चे जब इस प्रकार की अस्वीकृति महसूस करते हैं, तब कक्षा की गतिविधियों में उनके सक्रिय रूप से भाग लेने की संभावना कम हो जाती है। स्कूल में शिक्षक केवल निष्क्रिय रूप से बच्चों की भाषाई और सांस्कृतिक विविधताओं को स्वीकार करें, यह पर्याप्त नहीं है। शिक्षकों को सक्रिय होना चाहिए और बच्चों की भाषा को कक्षा की गतिविधियों में शामिल करने की पहल करनी चाहिए।'

– **डॉ. जिम कमिन्स,** प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री और भाषा शिक्षण विशेषज्ञ

2.4. कक्षा में संवाद बढ़ता है और यह बाल-केंद्रित होती है

बहुत से अध्ययन यह बताते हैं कि जब बच्चों की घर की भाषा का उपयोग कक्षा में किया जाता है, तो कक्षा में आपसी संवाद बढ़ता है और बच्चे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। इस स्थिति में सीखना ज्ञात से अज्ञात की ओर होता है।

चित्र 2: अपने घर की भाषा वागड़ी और स्कूल की भाषा हिंदी के उपयोग से बच्चे सक्रिय रूप से एक कहानी सुनते हुए और कक्षा की चर्चा में भाग लेते हुए।

2.5. रचनात्मकता, अभिव्यक्ति, उच्च स्तरीय चिंतन और तर्क करने की क्षमता का विकास होता है

यदि कक्षा में शिक्षण एक ऐसी भाषा में होता है जो बच्चे नहीं समझते हैं, तब पूरा ध्यान रटने, ब्लैकबोर्ड या पुस्तक से सामग्री उतारने और सामूहिक दोहराव पर होता है। बच्चे केवल अपनी मजबूत भाषा में ही स्वयं को आसानी से व्यक्त कर सकते हैं और उच्च स्तरीय चिंतन व तार्किक कार्यों में संलग्न हो सकते हैं। इसलिए यदि हम यह चाहते हैं कि

प्राथमिक स्तर पर बच्चों में उच्च स्तर के चिंतन और अभिव्यक्ति कौशलों का विकास हो, तो बच्चों की L1 को औपचारिक रूप से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शामिल किए जाने की आवश्यकता है।

एक अपरिचित भाषा के माध्यम से सीखने वाले बच्चों को दोहरी प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करना होता है।

एक अपरिचित भाषा के माध्यम से सीखने वाले बच्चों को 'सीखने में दोहरे नुकसान' का सामना करना होता है। एक ओर तो उन्हें एक नई भाषा सीखनी होती है और दूसरी ओर उस अपरिचित भाषा के माध्यम (शिक्षण का माध्यम) से अन्य विषयों को भी सीखना होता है। दूसरी भाषा में बुनियादी साक्षरता कौशल हासिल करना भी चुनौतीपूर्ण होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि बच्चे को न केवल लिपि को डिकोड करना होता है बल्कि उसे समझ के साथ पढ़ने के लिए दूसरी भाषा में शब्दावली और मौखिक समझ का विकास करना होता है। देश में आज 'सीखने' से सबसे अधिक वे बच्चे वंचित हैं, जो अंग्रेजी माध्यम के ऐसे स्कूलों में पढ़ते हैं, जहाँ पढ़ाई का स्तर अच्छा नहीं है। ऐसे स्कूलों से निकलने वाले बच्चे 'सेमी-लिंगुअल' होते हैं, जो किसी भी भाषा में निपुण नहीं होते हैं और केवल रटने पर आश्रित होते हैं क्योंकि उनकी अंग्रेजी भाषा की समझ उस स्तर की नहीं होती है कि वे पाठ्यचर्या की समझ विकसित कर पाएँ।

बच्चों के लिए अपरिचित भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में तब तक उपयोग नहीं किया जाना चाहिए, जब तक कि वे उसमें बुनियादी दक्षता न हासिल कर लें।

2.6. बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN) के लिए परिचित भाषा का प्रयोग सहायक है

साक्षरता का अर्थ अक्षरों और शब्दों की केवल पहचान करने की क्षमता नहीं है, बल्कि प्रमुख उद्देश्य 'समझ के साथ पढ़ने' के कौशल का विकास करना है। जैसा कि नीचे समीकरण में दिखाया गया है, समझ के साथ पढ़ने के लिए शब्दों की पहचान की क्षमता के साथ-साथ भाषा की अच्छी समझ की आवश्यकता होती है। भाषा की अच्छी समझ में शामिल हैं- शब्दावली ज्ञान, भाषा की संरचना की समझ, मौखिक तर्कशीलता आदि। इस प्रकार प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चे उसी भाषा में अच्छी तरह से पढ़ और लिख सकते हैं, जो वे बोलते और समझते हैं। बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान के लक्ष्यों को पूरा करने के हमारे प्रयास तभी सफल होंगे, जब भाषा की समझ सुनिश्चित करने के लिए बच्चों के घर की भाषा को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शामिल किया जाए।

समझ के साथ पढ़ना = भाषा की समझ x शब्द पहचान

बच्चों की अपरिचित भाषा को तब तक शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग नहीं किया जाना चाहिए, जब तक कि वे इस भाषा में बुनियादी दक्षता हासिल न कर लें।

3. भाषा विकास से संबंधित कुछ सामान्य भ्रांतियाँ क्या हैं?

3.1. बच्चे मातृभाषा जानते हैं, उसे पढ़ाने की क्या आवश्यकता है?

3.2. यदि बच्चे कम परिचित भाषा बोल सकते हैं तो वे उसे सीख चुके होते हैं।

3.3. अंग्रेजी भाषा अच्छे से सीखने के लिए यह जरूरी है कि इसकी पढ़ाई पूर्व-प्राथमिक या कक्षा-1 से शुरू की जाए।

3.4. घर की भाषा के माध्यम से सीखने से राज्य की भाषा सीखने के लिए कम समय मिलता है।

3.5. भाषाओं को अलग-अलग सिखाया जाना चाहिए, जिससे वे एक-दूसरे के सीखने में बाधा ना बनें।

3.6. बच्चों के घर की भाषा विकसित नहीं है, कुछ तो लिखित रूप में भी नहीं हैं। इनका उपयोग औपचारिक शिक्षण में कैसे किया जा सकता है?

आइए, अब इन्हें एक-एक कर विस्तार से समझते हैं:

3.1. बच्चे मातृभाषा जानते हैं, उसे पढ़ाने की क्या आवश्यकता है?

सच्चाई: बच्चे जब पहली बार स्कूल आते हैं, तब वे अपनी मातृभाषा धाराप्रवाह बोल सकते हैं। स्कूल की पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण में भाषा का उपयोग अमूर्त और असंदर्भित रूप से किया जाता है, जो घर में और पूर्व-प्राथमिक स्तर पर भाषा के संवाद के लिए किए जाने वाले उपयोग से भिन्न होता है। इसके अतिरिक्त भाषा का उपयोग विभिन्न शैक्षिक उद्देश्यों जैसे चिंतन, तर्क और निष्कर्ष निकालने के लिए भी किया जाता है। किसी भी भाषा में अकादमिक कौशलों के विकास के लिए 4 से 6 वर्ष की आवश्यकता होती है, चाहे वह बच्चे की प्रथम भाषा ही क्यों न हो।

3.2. यदि बच्चे कोई कम परिचित भाषा बोल सकते हैं, तो वे उसे सीख चुके होते हैं।

सच्चाई: एक बच्चे के द्वारा बातचीत के दौरान भाषा के उपयोग की क्षमता और स्कूल में उपयोग की जाने वाली 'शैक्षिक भाषा' को समझने और उसके साथ काम करने की क्षमता में अंतर पहचानना एक महत्वपूर्ण कार्य है। प्रायः शिक्षक यह कहते हैं कि प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चा शिक्षा के माध्यम की भाषा जानता है, वास्तविकता यह होती है कि बच्चे केवल आपसी बातचीत के लिए उपयोगी भाषा ही जानते हैं। कक्षा 4 तक आते-आते जब स्कूल के विषयों की भाषा संरचना जटिल और अवधारणाएँ अमूर्त हो जाती हैं तथा बच्चों का अपरिचित शब्दावली से सामना होता है, तो वे इन्हें समझ नहीं पाते और उनके पास पाठ्यसामग्री रटने के अलावा कोई रास्ता नहीं होता। इसलिए शिक्षा का माध्यम बनाए जाने से पहले एक अपरिचित भाषा के विकास हेतु 5 से 7 वर्षों का समय दिया जाना आवश्यक है।

3.3. अंग्रेजी भाषा अच्छे से सीखने के लिए यह जरूरी है कि इसकी पढ़ाई पूर्व-प्राथमिक या कक्षा-1 से शुरू की जाए।

सच्चाई: यह सच है कि छोटे बच्चे दो या अधिक भाषाएँ आसानी से सीख सकते हैं, यदि उन्हें इन भाषाओं में सहज और अर्थपूर्ण संवाद का वातावरण मिले, जैसा कि उन्हें अपनी पहली भाषा सीखते समय घर पर मिलता है परन्तु हम सभी जानते हैं कि अधिकांश बच्चों के परिवेश में अंग्रेजी का सहज वातावरण उपलब्ध नहीं है। स्कूलों में प्रारंभिक स्तर से ही अंग्रेजी औपचारिक रूप से अक्षरों और लिपि द्वारा सिखाई जाती है। यह एक भाषा को सहजता से सीखने के तरीके

के विपरीत होता है। ऐसे उदाहरण नहीं के बराबर हैं, जो यह दिखाते हैं कि छोटे बच्चों में अतिरिक्त या अपरिचित भाषा को स्कूल के औपचारिक शिक्षण द्वारा सीखने की मजबूत क्षमता होती है। हालाँकि, इस बात के बहुत से उदाहरण हैं जो दिखाते हैं कि 10 वर्ष या उनसे बड़े बच्चे औपचारिक शिक्षण द्वारा बेहतर तरीके से अतिरिक्त भाषाएँ सीख सकते हैं। इसलिए छोटे बच्चों को बुनियादी स्तर पर औपचारिक रूप से अंग्रेजी नहीं सिखाई जानी चाहिए। प्रारंभिक वर्षों में बच्चों को उनकी घर की भाषा के सहयोग से अर्थपूर्ण संवाद, कहानियों, गीतों, और कविताओं आदि के माध्यम से मौखिक अंग्रेजी का एक वातावरण दिया जा सकता है।

3.4. घर की भाषा के माध्यम से सीखने से राज्य की भाषा सीखने के लिए कम समय मिलता है।

सच्चाई: भाषा के विकास से संबंधित एक सामान्य भ्रांति यह है कि अलग-अलग भाषाएँ हमारे मस्तिष्क में गुब्बारों की तरह अपनी-अपनी जगह बनाती हैं। यदि L1 में शिक्षण को अधिक समय दिया गया तो L1 का गुब्बारा बड़ा हो जाता है और अन्य भाषाओं, जैसे अंग्रेजी के लिए कम जगह बचती है। 'गुब्बारा सिद्धांत' पूरी तरह से गलत साबित किया जा चुका है। भाषाएँ एक-दूसरे के साथ विकसित होती हैं, एक भाषा का विकास दूसरी के विकास में सहायक होता है (चित्र 3)। प्रारंभिक वर्षों में एक भाषा की मजबूत बुनियाद यह सुनिश्चित करती है कि बच्चा अन्य भाषाएँ अच्छी तरह से सीखेगा। यहाँ यह कहना भी महत्वपूर्ण है कि अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं को सीखने में घर की भाषा महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार, बहुभाषी शिक्षा का तरीका अपनाया जाना चाहिए, जहाँ दो या अधिक भाषाएँ एक साथ उपयोग की जाती हैं और मजबूत भाषा एक अपरिचित या कम परिचित भाषा के विकास में मदद करती है।

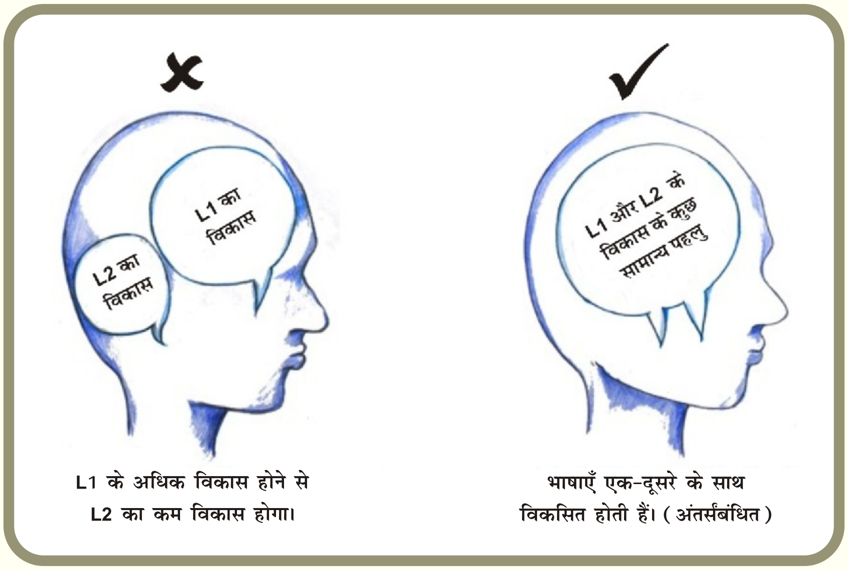

चित्र 3: मस्तिष्क में भाषा विकास संबंधित भ्रांति और सच्चाई

3.5. भाषाओं को अलग-अलग सिखाया जाना चाहिए, जिससे वे एक-दूसरे के सीखने में बाधा न बनें।

सच्चाई: सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में भाषाओं को अलग-अलग रखना बनावटी है। जैसा कि हम जानते हैं कि भाषाएँ एक-दूसरे के साथ विकसित होती हैं। मजबूत भाषाएँ, अपरिचित या कम परिचित भाषाओं को सीखने में मदद कर सकती हैं। बहुभाषी तरीके में बच्चों को भाषाओं को एक साथ (मिश्रित रूप से) उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे अच्छी समझ और अभिव्यक्ति हो सके।

3.6. बच्चों के घर की भाषा विकसित नहीं है, कुछ तो लिखित रूप में भी नहीं है। इनका उपयोग औपचारिक शिक्षण में कैसे किया जा सकता है?

सच्चाई: भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ अधिकांश लोग दो या अधिक भाषाएँ बोलते हैं, फिर भी यहाँ भाषाओं को बराबरी का दर्जा प्राप्त नहीं है। इस प्रकार भाषाओं को छोटा–बड़ा मानने के कारण गैर–प्रभुत्वशाली भाषाओं, जैसे– आदिवासी समुदाय द्वारा बोली जाने वाली या क्षेत्रीय भाषाओं (बघेली और संबलपुरी आदि) पर ध्यान नहीं दिया जाता और उन्हें शिक्षा या प्रशासन में औपचारिक रूप से उपयोग भी नहीं किया जाता है। इस कारण इन गैर–प्रभुत्वशाली भाषाओं का उपयोग कम होता जा रहा है और यह केवल अनौपचारिक रूप से व समुदाय के बीच ही उपयोग की जाती हैं।

गैर–प्रभुत्वशाली भाषाओं के बारे में पूर्वाग्रह: ये भाषाएँ कमतर हैं।

शिक्षा व्यवस्था की गैर–प्रभुत्वशाली भाषाओं के प्रति मान्यताएँ और सोच बच्चों की घर की भाषा का कक्षा के कार्यों में उपयोग करने में सबसे बड़ी बाधा है। शिक्षा व्यवस्था के ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि ये भाषाएँ सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के लिए उपयुक्त नहीं हैं। कक्षा में बहुभाषिकता के महत्व, अप्रभावशाली भाषाओं, संस्कृति व स्थानीय ज्ञान को मान्यता देने और सीखने में बच्चों की मजबूत भाषा की भूमिका के प्रति आम सहमति बनाने की आवश्यकता है। साथ ही इस बात की जागरूकता की भी आवश्यकता है कि किस प्रकार प्रथम भाषा में दक्षता का विकास, राज्य की भाषा और अंग्रेजी सीखने में मदद करता है।

इनमें से बहुत–सी भाषाओं की समृद्ध मौखिक परंपराएँ और साहित्य हैं। आधिकारिक रूप से मान्यता न मिलने के कारण शिक्षा में उपयोग के लिए इन भाषाओं का विकास नहीं हो सका, परन्तु किसी भी भाषा के लिए किसी लिपि में लेखन प्रणाली विकसित करना और आवश्यकतानुसार शब्दावली जोड़ना संभव है। ओडिशा में 2005 से शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग की जा रही 21 आदिवासी और लिंक भाषाओं में पाठ्यपुस्तकों और अन्य शिक्षण सामग्रियों का निर्माण किया गया है। छत्तीसगढ़ में 2020 से कक्षा 1 के लिए 16 भाषाओं में द्विभाषी पाठ्यपुस्तकें (स्थानीय भाषा और हिन्दी) लागू की गई हैं। इन भाषाओं को लिखने के लिए क्रमशः राज्य की भाषा ओडिया और देवनागरी लिपि का उपयोग किया गया है।

4. बहुभाषी शिक्षण क्यों जरूरी है?

अभी तक हमने यह समझा कि प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों की परिचित/घर की/मातृभाषा का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। परिचित भाषा (L1) 'समझ का माध्यम' और बेहतर सीखने का माध्यम है।

किन्तु हमारा समाज बहुभाषी है। अगर बच्चों को आगे जाकर सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था में प्रभावी भागीदारी करनी है तो उन्हें व्यापक संचार की भाषाओं (जो समाज और अर्थव्यवस्था में प्रभुत्वशाली हैं) को भी अच्छी तरह सीखना होगा, उनमें दक्षता हासिल करनी होगी। जैसे– कक्षा–8 तक अच्छी अंग्रेजी बोल पाना और एक 'ठीक–ठाक' स्तर पर अंग्रेजी समझ के साथ पढ़ना और लिख पाना। यह एक बड़े पैमाने पर आकांक्षा है। इसलिए प्राथमिक स्तर की स्कूली व्यवस्था को बहुभाषी शिक्षा का रूप देना होगा।

बच्चे की परिचित भाषा (L1) + राज्य की/स्थानीय भाषा (जैसे- हिन्दी, मराठी आदि) + अंग्रेजी
(सभी भाषाओं का प्रभावी शिक्षण)

बच्चे पहले 8 वर्षों की स्कूली शिक्षा में इन तीनों भाषाओं में दक्षता हासिल करें।

दो या तीन भाषाओं का शिक्षण में औपचारिक प्रयोग करना बहुभाषी शिक्षा की एक मौलिक विशेषता है।

5. हमारे देश के लिए उपयुक्त बहुभाषी शिक्षा के सिद्धांत क्या हैं?

वर्तमान संदर्भ (नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)

कक्षा में बच्चों की परिचित भाषा(ओं) का इस्तेमाल करना सीखने के लिए महत्वपूर्ण है

NIPUN BHARAT

- प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की भाषाओं और स्कूल की भाषा के बीच की दूरी को कम करने के पूरे प्रयास किए जाने चाहिए।
- जहाँ तक संभव हो, सरकारी और निजी स्कूलों में कक्षा 5 तक बच्चों की घर की भाषा को शिक्षण के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

अधयाय–2 में हम पढ़ेंगे कि भारत के अधिकांश हिस्सों में भाषायी परिस्थितियाँ काफी विविध और जटिल हैं। अलग–अलग सामाजिक–भाषायी संदर्भों में भाषाओं के उपयोग की रणनीतियाँ भी अलग होंगी। फिर भी, नीचे लिखे बहुभाषी शिक्षा के सिद्धांत प्राथमिक स्तर पर किसी भी तरीके या रणनीति के लिए मान्य होंगे।

5.1. बच्चों के घर की भाषाएँ (L1) औपचारिक रूप से कक्षा में प्रयोग की जाती हैं और इनका प्रयोग अतिरिक्त भाषाओं और अन्य विषयों की विषयवस्तु को सीखने में संसाधन के रूप में किया जाता है। शिक्षक बच्चों को उनकी भाषा (L1) में जवाब देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शिक्षक स्वयं कक्षा की चर्चाओं में बच्चों की भाषा का प्रयोग करते हैं, L1और L2, दोनों में कहानियाँ सुनाते हैं और कठिन शब्दों और अवधारणाओं को समझाने के लिए L1 का प्रयोग करते हैं।

5.2. बच्चे अपनी परिचित भाषा (L1) की मदद से नई भाषाएँ (L2) सीखते हैं। अपरिचित भाषाएँ सीखने की प्रक्रिया में 'मिली–जुली' भाषा का प्रयोग करना एक सशक्त रणनीति है।

5.3. बहुभाषी कक्षा सभी बच्चों की भाषाओं और संस्कृति के लिए परस्पर सम्मान और सहिष्णुता दर्शाती है। यहाँ केवल एक ही भाषा प्रभावशाली नहीं होती है।

5.4. पूरी पाठ्यचर्या में सीखने-सिखाने के लिए बहुभाषी तरीकों का उपयोग किया जाना चाहिए। कठिन अवधारणाओं या उच्च स्तरीय कौशलों के विकास और तार्किक कार्यों में बच्चों के L1 का प्रयोग किया जाना चाहिए।

5.5. बहुभाषी (और बहुसांस्कृतिक) तरीका बच्चों की संस्कृति और अनुभवों को कक्षा में जगह देता है। यह कार्य योजनाबद्ध तरीके से पाठ्यपुस्तकों में नहीं किया जा सकता है।

परिचित भाषा का सेतु

बुनियादी वर्षों में घर की भाषा या परिचित भाषा का सेतु बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है।

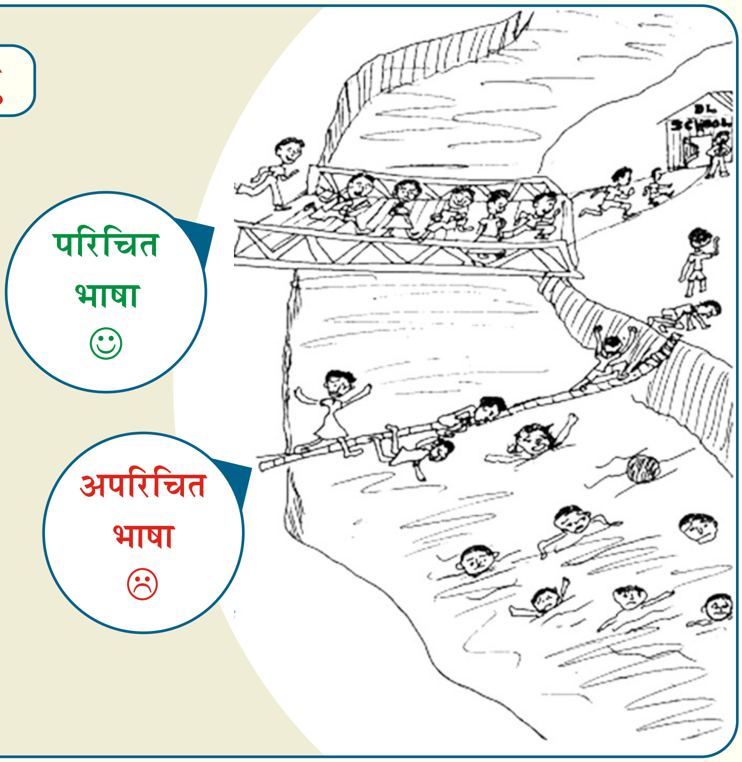

इस अध्याय में हमने जाना

- सीखने में भाषा की क्या भूमिका है,
- बच्चों के लिए मजबूत भाषा (L1) के माध्यम से सीखने का क्या महत्व है,
- भाषा विकास से संबंधित कुछ सामान्य भ्रांतियाँ क्या हैं,
- बहुभाषी शिक्षण क्यों जरूरी है; और
- हमारे देश के लिए उपयुक्त बहुभाषी शिक्षा के सिद्धान्त क्या हैं।

अध्याय-2

कक्षाओं में विविध भाषायी परिस्थितियाँ

1. किन बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में मध्यम स्तर से गंभीर स्तर की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

तालिका 1: वे बच्चे, जिन्हें भाषायी मुद्दों के कारण सीखने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

समूह	विवरण	नोट्स
1.	**अनुसूचित जनजातियों (अजजा) के बच्चे, विशेषकर जो सुदूर जनजाति बाहुल्य इलाकों में निवास करते हैं, जो अपने घर में अपनी मातृभाषा बोलते हैं।**	बच्चों का यह समूह सीखने में गंभीर कठिनाइयों का सामना करता है क्योंकि इनकी घर की भाषा या इनके द्वारा अपनाई गई क्षेत्रीय भाषा स्कूलों में शिक्षा के माध्यम से अलग होती है। ऐसी प्राथमिक शालाओं की पहचान करना (यूडाईस द्वारा) आसान होता है, जहाँ अधिकांश बच्चे जनजाति समूहों से आते हैं।
2.	**ऐसे बच्चे, जो अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्रों में निवास करते हैं, जहाँ शिक्षा के माध्यम के रूप में उनकी मातृभाषा का उपयोग करने वाले स्कूलों की संख्या पर्याप्त नहीं है।**	उदाहरण के लिए, ओडिशा-आंध्रप्रदेश सीमा से लगे कोरापुट जिले में तेलुगु बोलने वाले बच्चे।
3.	**ऐसे बच्चे, जो क्षेत्रीय भाषा बोलते हैं, जिसे शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग होने वाली मानक भाषा की 'बोली' माना जाता है। स्कूल में प्रवेश के समय इन बच्चों की मानक भाषा की समझ कम होती है।**	इनमें से अधिकांश भाषाएँ राज्य की भाषा से भिन्न होती हैं और सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए इन बच्चों के लिए स्कूल की भाषा द्वितीय भाषा होती है। उदाहरण के लिए दक्षिणी उत्तर प्रदेश में बुंदेली और पश्चिमी ओडिशा में संबलपुरी बोलने वाले बच्चे।
4.	**प्रवासियों के बच्चे, जो एक ऐसे राज्य में रहते हैं, जहाँ की आधिकारिक भाषा बच्चों की भाषा से अलग है।**	उदाहरण के लिए, केरल में प्रवासी मजदूरों के बच्चे या छत्तीसगढ़ के रायपुर में ओडिया बोलने वाले प्रवासी मजदूरों के बच्चे। इनमें सबसे अधिक वंचित वे बच्चे होते हैं, जिनके परिवार किसी विशेष समय (मौसम) में अन्य राज्यों में प्रवास करते हैं। (Seasonal Migration)
5.	**ऐसे बच्चे, जो शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा से पढ़ाई करते हैं और जिन्हें स्कूल के बाहर इस भाषा के उपयोग के अवसर नहीं मिलते हैं। अंग्रेजी शिक्षण का तरीका एक नई भाषा सीखने के लिए उपयुक्त नहीं होता है।**	अंग्रेजी माध्यम के कम शुल्क लेने वाले अधिकांश निजी और सरकारी स्कूलों के लिए यह एक सामान्य परिस्थिति है।

2. शिक्षण के उपयुक्त तरीकों का निर्णय लेने हेतु भाषायी परिस्थितियों की पहचान और वर्गीकरण किस प्रकार किया जा सकता है?

2.1. भाषा के जटिल सन्दर्भ

2.2. भाषा के मानचित्रण की आवश्यकता

आइए, इन्हें एक-एक करके विस्तार से समझते हैं-

2.1. भाषा के जटिल संदर्भ

भारत में भाषा संबंधित संदर्भ जटिल हैं और एक राज्य, जिला और ब्लॉक के अंदर इनमें काफी भिन्नता पाई जाती है। भाषायी परिस्थितियों में भिन्नताओं के कुछ गुण नीचे दिए गए हैं-

बच्चे केवल अपनी मातृभाषा बोलते हैं: कुछ अनुसूचित जनजातियाँ दूरस्थ अंचलों में निवास करती हैं। इन जनजातियों के बच्चे जब पहली बार स्कूल आते हैं, तब वे केवल अपने घर की भाषा ही बोलते हैं, जैसे ओडिशा की सौरा और आंध्रप्रदेश की कोया जनजाति। कई समूहों के घर की भाषा उस क्षेत्र की अन्य प्रभावशाली भाषाओं से प्रभावित होती हैं। उदाहरण के लिए, गुजरात की सीमा से लगे राजस्थान के जिले डुंगरपुर की वागड़ी भाषा में गुजराती भाषा का प्रभाव दिखता है। स्थानीय स्तर पर बोली जाने वाली भाषा दो या अधिक भाषाओं से भी प्रभावित होती है।

कभी-कभी स्थानीय भाषा को कोई विशिष्ट भाषायी लेबल देना या ऐसी भाषायी सीमाओं की पहचान करना संभव नहीं होता, जहाँ बोलचाल का एक पैटर्न दूसरे पैटर्न में बदल जाता है।

एक ही भाषा के विभिन्न प्रकार (बोलियाँ): कुछ ऐसे समुदाय भी होते हैं, जो एक ही भाषा के विभिन्न प्रकार बोलते हैं। जैसे दक्षिणी राजस्थान में बोली जाने वाली वागड़ी के कम-से-कम तीन प्रकार एक ही जिले में हैं। दक्षिणी छत्तीसगढ़ में गोंडी भाषा के भी अलग-अलग प्रकार हैं, जैसे- गोंडी (बस्तर), गोंडी (कांकेर) और गोंडी (दंतेवाड़ा)।

संपर्क भाषा का प्रयोग: कई क्षेत्रों में विभिन्न भाषायी समुदायों के बीच संप्रेषण के लिए एक संपर्क भाषा प्रयोग की जाती है। यह संपर्क भाषा प्राय: अन्य भाषाओं का मिश्रण होती है। असम में चाय के बागानों में काम करने वाले आदिवासी समूहों के घर की भाषा मुंडारी, कुडुख या संथाली हो सकती है, परन्तु इन समुदायों के बीच संपर्क की भाषा सादरी है।

एक स्थानीय क्षेत्रीय भाषा को अपनाना: कई क्षेत्रों में लोगों ने अपनी मातृभाषाओं का उपयोग करना बंद कर दिया है और एक स्थानीय क्षेत्रीय भाषा को अपना लिया है। उदाहरण के लिए, छत्तीसगढ़ राज्य के रायगढ़ जिले के कुछ हिस्सों में आदिवासी समुदाय ने छत्तीसगढ़ी भाषा को अपनी मातृभाषा के रूप में अपना लिया है।

बोलने की भाषा में समय के साथ बदलाव: मिश्रित आबादी और उच्च साक्षरता वाले किसी शहर या गाँव के पास के गोंडी आदिवासी क्षेत्र के पालक और अन्य वयस्क घर में अपने बच्चों के साथ हिन्दी में बातें करेंगे जबकि वे अन्य बुजुर्गों के साथ गोंडी में बातें करते हैं। कुछ ऐसे भी समुदाय हैं, जहाँ बहुभाषिकता सामान्य है और वहाँ बच्चे दो या अधिक भाषाएँ बोलते हुए बड़े होते हैं।

2.2. भाषाओं के मानचित्रण की आवश्यकता

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की प्रथम भाषा को शामिल करने की रणनीतियों के विकास हेतु यह आवश्यक है कि सबसे पहले स्कूलों और कक्षाओं के भाषायी संदर्भों को समझा जाए। इसके लिए एक भाषायी मानचित्रण की

आवश्यकता है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ बच्चों के घर की भाषा स्कूल में उपयोग की जाने वाली मानक भाषा से अलग है। बच्चे जब 5 या 6 वर्ष की आयु में पहली बार स्कूल आते हैं, तब उनकी भाषा संबंधी दक्षताओं के बारे में बहुत कम आँकड़े उपलब्ध होते हैं। भाषाओं के मानचित्रण से हम जान सकते हैं कि

- बच्चों के घर की भाषा (एँ) क्या हैं?
- शिक्षक बच्चों की भाषा (ओं) को कितना समझते हैं?
- क्या उस क्षेत्र विशेष में कोई लिंक (संपर्क) भाषा है और बच्चे उसे समझते हैं?
- किसी कक्षा/क्षेत्र की भाषायी परिस्थिति कैसी है?, इत्यादि।

नीचे तालिका के बाएँ कॉलम में सामाजिक–भाषायी मानचित्रण के कुछ आयाम दिए गए हैं। तालिका में दाईं ओर कक्षा की भाषायी परिस्थिति के प्रकार दिखाए गए हैं।

तालिका 2: कक्षा में भाषायी परिस्थितियों के प्रकार : सामान्य सामाजिक-भाषायी मानचित्रण

कक्षा की भाषायी परिस्थिति निर्धारित करने के आयाम	कक्षा की भाषायी परिस्थिति के प्रकार
• बच्चों की घर की भाषा/प्रथम भाषा	**प्रकार–1:** बच्चे एक क्षेत्रीय भाषा बोलते हैं, जिसमें स्कूल की भाषा से काफी समानताएँ हैं। यहाँ पर बच्चों को सीखने में ज्यादा कठिनाई नहीं आती।
• स्कूल की भाषा की समझ (MoI)	**प्रकार–2:** दाखिले के समय अधिकांश बच्चों में स्कूल की भाषा की सीमित समझ है या कोई समझ नहीं हैं और लगभग सभी बच्चों की मातृभाषा (या प्रथम भाषा) एक ही है और शिक्षक बच्चों की भाषा समझते/बोलते हैं।
• शिक्षक की भाषायी पृष्ठभूमि	**प्रकार–3:** दाखिले के समय अधिकांश बच्चों में स्कूल की भाषा की सीमित समझ है या कोई समझ नहीं हैं और लगभग सभी बच्चों की मातृभाषा (या प्रथम भाषा) एक ही है और शिक्षक बच्चों की भाषा नहीं समझते/बोलते हैं।
• शिक्षण के लिए कक्षा में प्रयोग की गई भाषा	**प्रकार–4 (a):** कुछ/अधिकांश बच्चों में स्कूल की भाषा की सीमित समझ है और बच्चे दो या अधिक भाषा समूहों से आते हैं परन्तु किसी भी L1 के 90% से ज्यादा बच्चे नहीं हैं। वहाँ कोई लिंक/संपर्क भाषा है और बच्चे उसे समझते हैं।
• एक ही कक्षा में दो या अधिक प्रथम भाषाएँ	**प्रकार–4 (b):** कुछ/अधिकांश बच्चों में स्कूल की भाषा की सीमित समझ है और बच्चे दो या अधिक भाषा समूहों से आते हैं परन्तु किसी भी L1 के 90% से ज्यादा बच्चे नहीं हैं। वहाँ कोई लिंक/संपर्क भाषा या तो नहीं है या बच्चे उसे नहीं समझते हैं।

इस अध्याय में हमने जाना

- किन बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में मध्यम स्तर से गंभीर स्तर की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है; और
- शिक्षण के उपयुक्त तरीकों का निर्णय लेने हेतु भाषायी परिस्थितियों की पहचान और वर्गीकरण किस प्रकार किया जा सकता है।

अध्याय–3

द्विभाषी/बहुभाषी शिक्षा : बच्चों की परिचित भाषाओं को सम्मिलित करने की रणनीतियाँ

1. बच्चों के घर की भाषा को शामिल करने के विभिन्न तरीके कौन-कौन से हैं?

हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों की विविध भाषायी परिस्थितियों को देखते हुए हम यह कह सकते हैं कि सीखने-सिखाने का कोई एक तरीका कभी भी पर्याप्त नहीं होगा। इसलिए, नीचे 4 तरीकों की रूपरेखा दी गई है।

1.1. मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा (MTB-MLE) : विवरण एवं उपयुक्त परिस्थितियाँ

1.2. बच्चों की अपरिचित भाषा शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग होती है और L1 का मौखिक तौर पर रणनीतिक रूप से व्यापक उपयोग और विकास होता है : मुख्य रणनीतियाँ–

- आरम्भ से सीखने-सिखाने का सारा काम बच्चों की घर की भाषा में ही करें।
- बच्चों के स्तर के अनुरूप घर की भाषा और स्कूल की भाषा का संतुलित, सोचा-समझा और रणनीतिक इस्तेमाल करें।
- घर की भाषा और स्कूल की भाषा के मिले-जुले इस्तेमाल को प्रोत्साहित करें।
- पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए बच्चों के घर की भाषा की मदद लें।
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में (सिर्फ बच्चों की भाषा ही नहीं) बच्चों के पूर्वज्ञान, संस्कृति और संदर्भों को (भी) शामिल करें।

1.3. कक्षा की बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में उपयोग करते हुए एक से अधिक घर की भाषाओं के साथ काम करना : विवरण एवं उपयुक्त परिस्थितियाँ

1.4. अंतरराज्यीय सीमा और विभिन्न भाषायी क्षेत्रों में बसे प्रवासियों के लिए रणनीतियाँ : विवरण और उपयुक्त परिस्थितियाँ

आइए, इन्हें अब एक-एक करके विस्तार से समझते हैं–

1.1. मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा (MTB-MLE)

भाषायी परिस्थिति II के लिए उपयुक्त (समूह 1 के बच्चे)

- सभी बच्चों के घर की भाषा समान होती है।
- बच्चों की L1, L2 से बहुत अलग होती है। (भाषाओं का आपस में कोई संबंध नहीं होता है।)
- बच्चे जब पहली बार स्कूल आते हैं तो उनकी L2 की सीमित समझ या कोई समझ नहीं होती है।
- स्कूल के बाहर L2 के उपयोग के सीमित अवसर या कोई अवसर नहीं होते हैं।
- पालकों से बहुत कम सहयोग मिलता है और घर के लोगों की साक्षरता कम होती है।
- समुदाय या जातीय पहचान की समझ L1 के शिक्षा में उपयोग की स्वीकृति के लिए महत्वपूर्ण होती है।
- शिक्षा में उपयोग के लिए L1 के विकास की आवश्यकता होती है।
- शिक्षकों की पृष्ठभूमि बच्चों की पृष्ठभूमि के समान होती है।

विवरण: प्राथमिक शिक्षा के पहले 4 से 5 वर्षों में बच्चों की L1 को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता है। कक्षा–1 से पहले बच्चों की मातृभाषा में 2 से 3 वर्षों के लिए उच्च गुणवत्तायुक्त शाला पूर्व शिक्षा का क्रियान्वयन बच्चों को L1 में मौखिक भाषा के कौशलों के अर्जन में मदद करेगा और यह सुनिश्चित करेगा कि बच्चों की L1 का उपयोग शिक्षा के माध्यम के रूप में 6 से 7 वर्षों तक किया जाए। (2–3 वर्ष शाला पूर्व और 4–5 वर्ष प्राथमिक शाला में)।

इस तरीके में बच्चे सबसे पहले L1 में साक्षरता कौशल सीखते हैं। यहाँ राज्य की भाषा बच्चे के लिए L2 है। L2 से बच्चों का परिचय कक्षा–2 में एक विषय के रूप में किया जाता है। सर्वप्रथम, यह मौखिक रूप से उपयोग की जाती है और उसके बाद L2 में साक्षरता कौशलों का विकास किया जाता है। तीसरी भाषा, जैसे अंग्रेजी का एक विषय के रूप में कक्षा–3 से परिचय कराया जा सकता है। इसका उपयोग भी पहले मौखिक रूप से किया जाता है और आगे की कक्षाओं में अंग्रेजी भाषा में साक्षरता कौशलों का विकास किया जा सकता है। बच्चे जब L2 में कुछ अकादमिक क्षमताएँ विकसित कर लें, तब इसका उपयोग शिक्षा के माध्यम के रूप में किया जा सकता है। एक अच्छा मॉडल वह है, जिसमें L1और L2 दोनों ही शिक्षा के माध्यम के रूप में एक या दो वर्षों तक उपयोग किए जाएँ। उदाहरण के लिए, पर्यावरण अध्ययन विषय के लिए L1 और गणित के लिए L2 और इसके विपरीत गणित के लिए L1 व पर्यावरण अध्ययन के लिए L2 का उपयोग किया जा सकता है। इसके पश्चात जब L2 शिक्षा का माध्यम बन जाती है, तब L1 और अंग्रेजी भाषा को विषय के रूप में पढ़ाया जाना जारी रखा जाता है। शिक्षा का माध्यम L1 से L2 हो जाने के बाद भी कठिन अवधारणाओं को समझाने, बच्चों की समझ और उच्च–स्तर के कौशलों की जाँच करने और बच्चों की अभिव्यक्ति के लिए L1 का कक्षा में उपयोग किए जाने की आवश्यकता है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि–

(a) शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग करने से पहले बच्चे L2 में पर्याप्त दक्षता प्राप्त कर लें और

(b) L1 में सीखी गई अवधारणाओं और कौशलों को उपयुक्त रणनीतियों द्वारा L2 में हस्तांतरित किया जाए।

मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा (MTB-MLE) के इस मॉडल को संवर्धनकारी या जोड़ने वाला (additive approach) कहा जाता है, जिसमें L1 को हटाए बिना नई भाषाओं को पाठ्यचर्या में शामिल किया जाता है। L2 के शिक्षा का माध्यम बनने के बाद भी L1 को एक विषय (कक्षा–8 तक) के रूप में रखा जाता है। इसके विपरीत एक ऋणात्मक मॉडल (subtractive approach) के अंतर्गत L2 से परिचय के बाद L1 को पाठ्यचर्या से हटा दिया जाता है।

मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा का सबसे उपयुक्त तरीका 'देर से बाहर निकलने' (late-exit model) का है। इस तरीके में शिक्षा के माध्यम के रूप में L2 का प्रयोग प्राथमिक स्कूल के 5 वर्षों के बाद किया जाता है। इस समय तक बच्चे पाठ्यपुस्तक की सामग्री को समझने के लिए L2 में पढ़ने, लिखने और अन्य अकादमिक कौशलों की अच्छी समझ विकसित कर चुके होते हैं। 'जल्दी बाहर निकलने' (early-exit model) के तरीके में शिक्षा के माध्यम के रूप में L1 से L2 में परिवर्तन प्राथमिक स्कूल के केवल 2 से 3 साल के बाद किया जाता है। बच्चों के सीखने के लिए यह तरीका सबसे कम लाभदायक है, क्योंकि शिक्षा के माध्यम के रूप में L2 से सीखने के लिए बच्चे पर्याप्त L2 नहीं सीख पाते हैं। साथ ही L1 में सीखी गई अवधारणाएँ और कौशलों का विकास उस स्तर तक नहीं हो पाता है कि उन्हें L2 में हस्तांतरित किया जा सके।

भारत में मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा का सुसंगत तरीके से क्रियान्वयन केवल ओडिशा राज्य में किया गया है। यह कार्यक्रम 2005 में प्रारंभ हुआ था और 1500 स्कूलों में 21 आदिवासी और अन्य स्थानीय भाषाओं में लागू किया गया।

ओडिशा बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के बारे में अधिक जानकारी के लिए आप 'दक्षिण एशिया में प्रारंभिक साक्षरता और बहुभाषी शिक्षा' दस्तावेज में दी गई केस स्टडी पढ़ सकते हैं।

उपयुक्त परिस्थितियाँ: यह एक गहन तरीका है, जिसके लिए एक मजबूत नीति और राजनीतिक समर्थन के साथ-साथ एक अप्रभावशाली भाषा को औपचारिक शिक्षण में शामिल करने के लिए समुदाय द्वारा जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता है।

- मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन के लिए समुदाय की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण है। यह स्कूल-समुदाय के मजबूत जुड़ाव की नींव का काम करता है।
- यदि भाषा लिखित रूप में नहीं हो, तो राज्य की भाषा की लिपि के उपयोग से अतिरिक्त शब्दावली (यदि आवश्यक हो) और लेखन प्रणाली का विकास किया जा सकता है।
- L1 में भाषा और अन्य विषयों की पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण सामग्रियों के विकास हेतु स्थानीय ज्ञान और संस्कृति को शामिल किए जाने की आवश्यकता है।
- इस तरीके की सफलता के लिए द्विभाषी या त्रिभाषी (मातृभाषा, राज्य की भाषा और अंग्रेजी) स्थानीय शिक्षकों की उपलब्धता महत्वपूर्ण है।
- प्रथम और द्वितीय भाषा शिक्षण के क्रियान्वयन हेतु शैक्षिक समर्थन के साथ शिक्षकों के निरंतर व्यावसायिक विकास के लिए गहन कार्य करने की आवश्यकता है।

1.2. बच्चों की अपरिचित भाषा शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग होती है और L1 का मौखिक तौर पर रणनीतिक रूप से व्यापक उपयोग और विकास होता है।

चित्र 4: L1 और L2 के मिले-जुले प्रयोग से बच्चे अपनी पसंदीदा कहानी पर रोल-प्ले करते हुए

भाषायी परिस्थिति I और II के लिए उपयुक्त (समूह 1 और 3 के बच्चे)

- लगभग सभी बच्चों की L1 उनकी L2 से मिलती–जुलती है। (ये भाषाएँ एक दूसरे से संबंधित हो सकती हैं या एक भाषा दूसरी का एक रूप हो सकती है या L2 और स्थानीय भाषा का मिला–जुला रूप हो सकती है, उदाहरण के लिए, अवधी या भोजपुरी और हिन्दी)
- दाखिले के समय बच्चों की L2 के मानक रूप की बहुत कम समझ है।
- स्कूल के बाहर L2 के उपयोग के सीमित अवसर हैं।
- घर में पालकों से बहुत कम सहयोग मिलता है।
- शिक्षा में औपचारिक रूप से उपयोग के लिए L1 को उपयुक्त नहीं माना जाता है और इसे शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता है।
- शिक्षकों को बच्चों की L1 आती है।

विवरण: कक्षा–1 से एक अपरिचित भाषा का शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग होता है, (उदाहरण के लिए, एक ऐसे क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग जहाँ घर की भाषा बुंदेली है)। हो सकता है, बच्चों को प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के 2 से 3 वर्षों के दौरान अपनी घर की भाषा के विकास के अवसर मिले हों, पूरे प्राथमिक स्तर के दौरान बच्चों की L1 का मौखिक रूप से और सोची–समझी रणनीति के तहत उपयोग किया जाता है। प्रारंभिक कक्षाओं में नई अवधारणाओं को समझने, उच्च–स्तरीय सोच विकसित करने और तार्किक कार्यों तथा मौखिक अभिव्यक्ति के लिए L1 का उपयोग किया जाता है। इस स्तर पर दूसरी भाषा सिखाने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं, जिनमें L2 की शब्दावली का शिक्षण और L2 सिखाने में L1 की मदद लेना शामिल है। कक्षा में L1 और L2 का संतुलित उपयोग किया जाता है। इन भाषाओं के उपयोग की सीमा का कोई सूत्र नहीं हो सकता है, बच्चों के स्तर और उनकी L2 में बातचीत की क्षमता को ध्यान में रखते हुए शिक्षक को यह निर्णय लेना चाहिए कि इनका समायोजित उपयोग किस प्रकार किया जाए। धाराप्रवाह अभिव्यक्ति के लिए भाषाओं का 'मिला–जुला' रूप सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा माना जाता है।

बहुभाषी शिक्षा के इस मॉडल की मुख्य रणनीतियाँ:

1. आरम्भ में सीखने–सिखाने का सारा काम बच्चों की घर की भाषा में ही करें।

- प्रारंभिक कक्षाओं (कम से कम कक्षा 2 तक) सभी विषयों में जटिल अवधारणाएँ या नई जानकारी समझाने, उच्च स्तरीय चिंतन, तर्क, विश्लेषण, रचनात्मक अभिव्यक्ति और अर्थ–निर्माण के लिए बच्चों के घर की भाषा का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाए।
- प्रारंभिक कक्षाओं के बाद भी, बच्चों के घर की भाषा या परिचित भाषा का औपचारिक और रणनीतिक प्रयोग किसी भी जटिल अवधारणा या उच्च स्तरीय कार्य में मदद के रूप में कक्षा–8 तक किया जाना चाहिए।
- इनके साथ–साथ, प्रारंभिक कक्षाओं में घर की भाषा/मातृभाषा की मदद से डिकोडिंग सिखाई जानी चाहिए। इसके लिए L1 के बहुत से संदर्भित शब्दों के साथ स्तर के अनुरूप और सरल L2 के शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। L1 शब्दों/वाक्यों के प्रयोग से बच्चों के लिए अर्थ–निर्माण और समझना तो सुनिश्चित होता ही है, वे साथ में डिकोडिंग की प्रक्रिया भी सीखते हैं।

कुछ ठोस सुझाव:

- स्कूल के प्रति बच्चों में एक मजबूत भावनात्मक संबंध बनाने और उन्हें कक्षा में सहज करने के लिए स्कूल में दाखिला लेने के पहले कुछ महीनों में सभी प्रकार की अनौपचारिक और औपचारिक बातचीत के लिए केवल बच्चों की भाषा का प्रयोग करें।
- यह भी सुनिश्चित करें कि बच्चों को प्रारंभ से ही उनके घर की भाषा में स्थानीय कहानियों, कविताओं, गीतों, पहेलियों आदि का अनुभव मिले। सीधे पाठ्यपुस्तक का प्रयोग न करें।
- सबसे पहले, बच्चों की घर की भाषा में ध्वनि जागरूकता का विकास किया जाए। उसके बाद L2 के सरल शब्दों को शामिल किया जा सकता है। जब बच्चों में L1और L2, दोनों भाषाओं की ध्वनि जागरूकता की अच्छी समझ विकसित हो जाए, तभी L2 में डिकोडिंग की ओर बढ़ना चाहिए।
- इनके साथ-साथ स्कूल की भाषा में बच्चों के शब्द-भंडार को बढ़ाने में मदद करने के लिए प्रारंभिक महीनों में कुछ रोचक और मजेदार गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं।

2. बच्चों के स्तर के अनुरूप घर की भाषा और स्कूल की भाषा का संतुलित, सोचा-समझा और रणनीतिक इस्तेमाल करें।

- बच्चों के घर की भाषा का उपयोग नई या कठिन अवधारणाओं को समझाने, उच्च स्तरीय सोच और अभिव्यक्ति के लिए किया जाना चाहिए।
- स्कूल की भाषा का उपयोग सामान्य चर्चा, परिचित विषयवस्तु और सरल अवधारणाओं को समझाने के लिए किया जाना चाहिए।
- स्कूल के कम से कम पहले दो वर्षों तक लेखन कार्यों में भी विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषाओं का मिश्रण करने की अनुमति/प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

3. घर की भाषा और स्कूल की भाषा के मिले-जुले इस्तेमाल को प्रोत्साहित करें।

- किसी भी समय बच्चों की भाषायी दक्षता के स्तर के आधार पर ही बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा के मिश्रण का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए। इसका कारण यह है कि बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा के प्रयोग की सीमा का कोई सूत्र नहीं हो सकता है। इन भाषाओं के प्रयोग को किस प्रकार समायोजित किया जाए, यह निर्णय लेने के लिए शिक्षक को बच्चों की समझ और स्कूल की भाषा बोलने की क्षमता के स्तर की जानकारी की आवश्यकता होती है।

कक्षाओं में मिश्रित भाषा के प्रयोग के कुछ उदाहरण:

- शिक्षक और/या बच्चे L1 वाक्य में L2 शब्दों का प्रयोग करते हैं।
- शिक्षक और/या बच्चे L2 वाक्य में L1 शब्दों का प्रयोग करते हैं।
- बच्चे L1 में बोलते हैं और शिक्षक L2 में जवाब देते हैं।
- बच्चे L2 में बोलते हैं और शिक्षक L1 में जवाब देते हैं।

- शिक्षक L2 में बोलते हैं और बच्चे L1 में जवाब देते हैं।
- शिक्षक L1 में बोलते हैं और बच्चे L2 में जवाब देते हैं।
- शिक्षक और/या बच्चे सहजता से अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग वाक्य बोलते हैं।
- शिक्षक और/या बच्चे दो भाषाओं को मिलाकर नए शब्द या वाक्य बनाते हैं।

4. पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए बच्चों के घर की भाषा की मदद लें।

- प्रारंभ के कुछ महीनों में, रोचक, मजेदार और सरल L2 कविताओं, हाव-भाव के साथ गीत, कहानियों और TPR (Total Physical Response – पूर्णत: शारीरिक प्रतिक्रिया) जैसी गतिविधियों से L2 शब्दावली शिक्षण पर ध्यान केंद्रित करें। एक भाषा में औपचारिक शिक्षण प्रारंभ होने से पहले यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे के पास उस भाषा की बुनियादी शब्दावली हो।
- घर की भाषा के परिचित शब्दों की मदद से डिकोडिंग सिखाएँ। मिली-जुली भाषा में लिखित अभिव्यक्ति को स्वीकार करें।
- दूसरी भाषा/स्कूल की भाषा अर्जित करने के लिए बच्चों को बहुत से अवसर प्रदान करें। स्कूल की भाषा के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री बच्चों के स्तर की, सरल, अर्थपूर्ण और उन्हें समझ आने वाली होनी चाहिए। बच्चों को एक तनाव रहित वातावरण में स्कूल की भाषा का उपयोग करने के लिए उद्देश्यपूर्ण, आनंददायक और अर्थपूर्ण अवसर दिए जाने की आवश्यकता है। बच्चे दूसरी भाषा/स्कूल की भाषा का उपयोग करने में सहज महसूस करें, इसके लिए चिंता मुक्त और भय मुक्त वातावरण बनाएँ।
- बच्चों को स्वाभाविक रूप से कोई भाषा अर्जित करने के लिए एक प्रेरणादायी और चिंता मुक्त स्थान में रहने की आवश्यकता है। व्याकरण, उच्चारण आदि संबंधी त्रुटियों को बार-बार सुधारने से बचना चाहिए। प्रारंभिक स्तर पर भाषा के रूप के स्थान पर उसकी समझ और संप्रेषण पर ध्यान होना चाहिए। यदि प्रारंभ के कुछ महीनों में बच्चे केवल अपनी घर की भाषा में जवाब दें तो उन्हें हतोत्साहित न करें। धीरे-धीरे, स्कूल की भाषा में बच्चों की दक्षता के विकास के अनुसार, बच्चों द्वारा मिश्रित भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

कुछ ठोस सुझाव:

- L2 को बच्चों के समझने योग्य बनाने के लिए कई तरीके उपयोग किए जा सकते हैं, जैसे: L2 के सरल शब्द और वाक्य, पाठ्यसामग्री समझाने के लिए बहुत से चित्र और मूर्त वस्तुएँ, शरीर की भाषा और हाव-भाव, धीरे-धीरे और स्पष्ट बोलना आदि। L2 समझने में मदद करने के लिए बच्चों के घर की भाषा का प्रयोग करना सबसे महत्वपूर्ण रणनीति है और सभी को इसे लागू करना चाहिए।
- द्वितीय भाषा विकास के लिए सरल और मजेदार मौखिक गतिविधियों को लागू किया जा सकता है: बच्चों के अनुभवों पर बातचीत करना, कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ, रोल-प्ले आदि। साथ ही, बच्चों के स्तर के अनुसार उनके घर की भाषा का पर्याप्त और रणनीतिक सहयोग लेना आवश्यक होगा।
- एक अपरिचित या स्कूल की भाषा का समृद्ध वातावरण देने के लिए पाठ्यपुस्तकें ही काफी नहीं होती हैं। बुनियादी वर्षों में स्कूल की भाषा को सहज और आनंददायक रूप से सीखने में बच्चों की मदद करने के लिए

मौखिक साक्षरता हेतु मददगार उच्च-गुणवत्ता की शिक्षण सामग्री जैसे- बिगबुक, कविताओं के पोस्टर, सरल कहानियों की पुस्तकों आदि का भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए।

5. सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में (सिर्फ बच्चों की भाषा ही नहीं) बच्चों के पूर्वज्ञान, संस्कृति और संदर्भों को (भी) शामिल करें।

पाठ्यपुस्तकें, कार्य-पुस्तिकाएँ, कहानी की पुस्तकें, कविताओं के पोस्टर आदि जैसी शिक्षण सामग्रियों में स्थानीय संस्कृति के संदर्भों का उपयोग किए जाने की आवश्यकता है। बच्चों के जीवन से जुड़े संदर्भों को अकादमिक सामग्री, भाषा के प्रयोग और शिक्षण प्रक्रियाओं में उपयुक्त स्थान दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए- डूंगरपुर, राजस्थान में वागड़ी भाषा बोलने वाले बच्चों के लिए लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन द्वारा बनाई गई। बिगबुक 'गीता जाने गई' में विवाह समारोह के दौरान जमीन पर बैठकर लड्डू, जलेबी और लप्सी खाने की स्थानीय प्रथाओं को दर्शाया गया है।

उपयुक्त परिस्थितियाँः

- गुणवत्तायुक्त शाला-पूर्व/प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम क्रियान्वित किए जाने चाहिए, जो L1 के मौखिक विकास का समर्थन करते हैं।
- शिक्षकों की L1 और L2 के साथ अंग्रेजी भाषा में निपुणता होनी चाहिए।
- शिक्षक को बच्चे के L1 का सम्मान करना चाहिए और उसके उपयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- बच्चों की संस्कृति और स्थानीय संदर्भों को कक्षा के कार्यों के साथ जोड़ा जाना चाहिए।
- L2 सिखाने के लिए, विशेषकर अर्थ-निर्माण के लिए, उचित तरीकों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- सीखने का आकलन करते समय L2 सीखने में हो रही देरी का ध्यान रखा जाना चाहिए। प्रत्येक कक्षा के लिए सीखने के अपेक्षित परिणामों को परिभाषित करते समय इसे सकारात्मक रूप से शामिल किया जाना चाहिए। उचित वातावरण मुहैया कराने पर ऐसे विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर के अंत तक L2 का अपेक्षित स्तर और अंग्रेजी भाषा के कौशल प्राप्त करने में सक्षम होना चाहिए।

इस प्रकार बहुभाषी शिक्षा के इस मॉडल में पाँच रणनीतियों पर काम किया जाना चाहिए-

1. आरम्भ में सीखने-सिखाने का सारा काम बच्चों की घर की भाषा में ही करें।
2. बच्चों के स्तर के अनुरूप घर की भाषा और स्कूल की भाषा का संतुलित, सोचा-समझा और रणनीतिक इस्तेमाल करें।
3. घर की भाषा और स्कूल की भाषा के मिले-जुले इस्तेमाल को प्रोत्साहित करें।
4. पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए बच्चों के घर की भाषा की मदद लें।
5. सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में (सिर्फ बच्चों की भाषा ही नहीं; बच्चों के पूर्वज्ञान, संस्कृति और संदर्भों को (भी) शामिल करें।

1.3. कक्षा की बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में उपयोग करते हुए एक से अधिक घर की भाषाओं के साथ काम करना

भाषायी परिस्थिति IV – IV (a) और IV(b) के लिए उपयुक्त

- एक कक्षा में घर की अलग-अलग भाषा (L1) वाले बच्चे।
- क्षेत्र में कोई लिंक अथवा संपर्क भाषा मौजूद और कक्षा-1 में दाखिले के समय बच्चे लिंक (संपर्क) भाषा समझते हैं।
- क्षेत्र में कोई लिंक अथवा संपर्क भाषा या तो मौजूद नहीं या कक्षा-1 में दाखिले के समय बच्चे लिंक (संपर्क) भाषा समझते नहीं हैं।
- शिक्षकों को बच्चों की कोई L1 और उस क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली लिंक भाषा आती है।
- शिक्षकों को बच्चों की कोई L1 और उस क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली लिंक भाषा नहीं आती है।

विवरण: जब किसी क्षेत्र में आपसी बातचीत के लिए संपर्क भाषा हो और दाखिले के समय बच्चों में इसकी कुछ समझ हो तो इसका प्रयोग शिक्षा के माध्यम के रूप में किया जा सकता है (यदि समुदाय इसका समर्थन करता है) या बच्चों को एक-दूसरे को समझने में मदद और L2 सीखने में सहयोग देने के लिए इसका प्रयोग एक लिंक भाषा के रूप में किया जाता है।

यदि किसी क्षेत्र में बातचीत के लिए संपर्क/लिंक भाषा नहीं होती तो इस परिस्थिति में शिक्षक द्वारा बच्चों को प्रारंभिक कक्षाओं में मौखिक रूप से उनके घर की भाषा के उपयोग के अवसर दिए जाने चाहिए। यह बच्चों में चिंतन, तर्क और अभिव्यक्ति कौशलों के विकास में मदद करता है। इन कक्षाओं में नीचे दी गई रणनीतियाँ उपयोग की जा सकती हैं:

- एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना
- शिक्षक द्वारा भाषाओं की तुलना करना
- कक्षा-1 में शिक्षक की सहायता के लिए बच्चों की L1 जानने वाले शिक्षण सहायकों की मदद लेना।
- कक्षा में ट्रांसलैंग्वेजिंग (मिली-जुली भाषा) का प्रयोग करना।

ट्रांसलैंग्वेजिंग एक से अधिक भाषाओं को लचीले तरीके से उपयोग करने का अभ्यास है, जिसकी मदद से हम स्वयं को बेहतर तरीके से व्यक्त करते हैं। अर्थपूर्ण तरीके से संवाद करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे यह न सोचें कि उन्होंने एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग किया है। ट्रांसलैंग्वेजिंग, शिक्षणशास्त्र के रूप में न केवल L2 सीखने में मदद करता है, बल्कि यह सीखने-सिखाने के एक तरीके के रूप में उपयोग होता है, जो सर्वोत्तम अभिव्यक्ति के लिए भाषाओं का अलग-अलग उपयोग न कर एक साथ उपयोग करने को बढ़ावा देता है। इसके लिए कई रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं: (a) शिक्षक बच्चों से L2 में खुले प्रश्न पूछते हैं और बच्चे अपनी L1 में जवाब देते हैं; (b) बच्चे L2 में लिखा एक पाठ पढ़ते हैं और इसके बारे में L1 में चर्चा करते हैं; (c) शिक्षक और बच्चे L2 में लिखा एक पाठ पढ़ते हैं और बच्चे पाठ को पहले ऐसी भाषा में लिखते हैं, जिसमें वे ज्यादा सहज हैं और फिर उसका स्कूल की भाषा में अनुवाद करते हैं; (d) बच्चे शब्दों और वाक्यों का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते हैं;

(e) नई भाषाएँ सीखने के लिए बच्चों के पराभाषाई कौशलों (metalinguistic skills) को सक्रिय करने और उनका उपयोग करने के लिए शिक्षक भाषाओं के बीच तुलना करते हैं; और (f) शिक्षक और बच्चे L1 और L2 का मिला-जुला रूप उपयोग करते हैं, जो अर्थ की धाराप्रवाह अभिव्यक्ति में मदद करता है।

इनमें से कुछ रणनीतियाँ बड़े बच्चों (लगभग 8-10 वर्ष) के लिए अधिक कारगर होती हैं क्योंकि इस स्तर पर वे 'भाषाओं के बारे में सोच सकते हैं' और अलग-अलग भाषाओं के पैटर्न की तुलना कर सकते हैं। प्रारंभिक वर्षों में छोटे बच्चों के साथ इन रणनीतियों का उपयोग करना आसान नहीं होता है। ऐसे बहुत कम उदाहरण हैं, जहाँ घर पर बोली जाने वाली कई भाषाओं का संसाधन के रूप में उपयोग कर शिक्षा के माध्यम में मजबूत आधारभूत साक्षरता कौशलों सहित बहुभाषिक दक्षताओं के विकास में मदद मिलती है। भारतीय संदर्भों में इन रणनीतियों पर अधिक कार्य करने की आवश्यकता है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ:

- L2 के साथ घर की कई भाषाओं के उपयोग की प्रक्रिया का समर्थन करने के लिए शिक्षक के पास स्वयं सीखने का धैर्य और बहुभाषिकता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए।
- कक्षा का वातावरण ऐसा होना चाहिए, जो विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं के प्रति परस्पर आदर और सहिष्णुता दर्शाता हो।

1.4. अंतरराज्यीय सीमा और विभिन्न भाषायी क्षेत्रों में बसे प्रवासियों के लिए रणनीतियाँ

भाषायी परिस्थिति III के लिए उपयुक्त (समूह 2 के बच्चे)

- बच्चों की भाषा मान्यता प्राप्त है, जिसका प्रयोग राज्य या देश के अन्य भागों में शिक्षा के माध्यम के रूप में होता है, परन्तु इस क्षेत्र के स्कूलों में नहीं होता है।
- लगभग सभी बच्चों की L1 एक ही है।
- स्कूल के बाहर L2 के प्रयोग करने के अवसर हैं।
- बच्चों की L1 पृष्ठभूमि समझने वाले शिक्षकों की उपलब्धता नहीं होती है।

विवरण: बच्चों की L1 का प्रयोग प्राथमिक स्तर के लिए किया जा सकता है। यदि समुदाय में अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति पहचान और मान की दृढ़ भावना है तो वे उच्च-प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर भी L1 माध्यम के स्कूलों की माँग कर सकते हैं। अधिकांशत: माँग यह होती है कि प्राथमिक कक्षाओं तक बच्चे L1 में सीखें और L2 (राज्य की आधिकारिक भाषा) एक विषय के रूप में पढ़ाई जाए। प्राथमिक कक्षाओं के अंत तक बच्चों को इतनी L2 सीख जाना चाहिए कि उच्च-प्राथमिक स्तर से इसे शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जा सके। कक्षा 4 और 5 के लिए L1और L2 दोनों का प्रयोग विभिन्न विषयों के लिए शिक्षा के माध्यम के रूप में किया जा सकता है। अंग्रेजी का शिक्षण एक विषय के रूप में कक्षा-3 से प्रारंभ किया जा सकता है। हालाँकि, यदि प्रवासी समुदाय ने क्षेत्रीय भाषा को अपना लिया होता है और दाखिले के समय बच्चे भाषा समझते हैं, तो इस तरीके की आवश्यकता नहीं होती है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ:

- समुदाय द्वारा यह माँग की जानी चाहिए कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में उनकी भाषा का प्रयोग किया जाए।

- ऐसे शिक्षकों की उपलब्धता होनी चाहिए जो बच्चों की L1 का शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग कर शिक्षण कार्य कर सकें। (उदाहरण के लिए, मध्यप्रदेश के कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों में मराठी बोलने वाले शिक्षक)। यदि यह स्थिति नहीं है, तो राज्य सरकार को विशिष्ट क्षेत्रों में उस भाषा के शिक्षकों की नियुक्ति करनी चाहिए।
- बच्चों की L1 में पाठ्यपुस्तकें और अन्य शिक्षण सामग्रियों का निर्माण किया जाना चाहिए। टी.एल.एम. निर्माण और शिक्षक प्रशिक्षण के लिए समीप के राज्य के शिक्षा विभाग और प्रशिक्षण संस्थाओं द्वारा मदद दी जा सकती है।

मौसमी तौर पर प्रवासी बच्चों के सीखने के मुद्दे

हमारे देश के बहुत बड़े हिस्से में मौसमी प्रवास होता है, जहाँ काम की तलाश में परिवार कुछ महीनों के लिए दूसरे राज्यों में प्रवास करते हैं। यह प्रवास खेती में बुआई व कटाई, ईंट भट्टों में काम, गन्ने की कटाई आदि के लिए होता है। इन परिवारों के बच्चे कुपोषण, स्वास्थ्य, सुरक्षा और अन्य प्रकार के शोषण की दृष्टि से सबसे अधिक असुरक्षित होते हैं। जब वे गंतव्य स्थल पर होते हैं, तब वे कई महीनों तक शिक्षा से वंचित होते हैं। यदि वहाँ वे स्कूल में दाखिला लेते हैं तो भी उन्हें सीखने के लिए मुश्किलों का सामना करना पड़ता है क्योंकि वे स्कूल में प्रयोग की जाने वाली शिक्षा के माध्यम की भाषा को समझ नहीं पाते हैं। कुछ राज्यों ने बच्चों को उनके पालकों के साथ जाने से रोकने के कुछ प्रयास किए हैं और बच्चों के लिए मौसमी हॉस्टल की सुविधा मुहैया कराई है, जिससे बच्चे अपनी शिक्षा जारी रख सकें। हालाँकि, यह कार्य अभी छोटे स्तर पर ही हो पा रहा है।

ऐसे गंतव्य क्षेत्रों के स्कूलों में जहाँ प्रत्येक वर्ष मौसमी प्रवास होता है, मूल राज्य द्वारा शिक्षक, पाठ्यपुस्तकें और अन्य शिक्षण सामग्री मुहैया कराई जा सकती है।

अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्रों और प्रवासी मजदूरों के बच्चों को उनकी घर की भाषा में शिक्षा मुहैया कराने की आवश्यकता की पहचान करने और L1 के जानकार शिक्षक व सामग्री उपलब्ध कराने के लिए राज्यों में आपसी समन्वय की आवश्यकता है।

2. दूसरी भाषा सीखने-सिखाने के लिए बच्चों के लिए मददगार कुछ अच्छी रणनीतियाँ कौन-सी हैं?

- 4.1. L2 में समझने योग्य पर्याप्त अवसर प्रदान करना
- 4.2. मौखिक भाषा विकास पर ध्यान केंद्रित करना
- 4.3. 'मिली-जुली' भाषा का प्रयोग सहज रूप से सीखने का चरण है
- 4.4. शब्दावली विकास पर ध्यान केंद्रित करना
- 4.5. तनाव रहित और सुरक्षित वातावरण प्रदान करना

आइए, अब इन्हें एक-एक कर विस्तार से समझते हैं:

4.1. L2 में समझने योग्य पर्याप्त अवसर प्रदान करना

कोई अपरिचित भाषा सीखने के लिए यह आवश्यक है कि उस भाषा को सुनने के पर्याप्त अवसर मिलें। साथ ही भाषा इस रूप में उपयोग की जाए, जिसे बच्चे आसानी से समझ सकें। प्रारंभिक कक्षाओं के लिए इसका निहितार्थ यह है कि

शिक्षक द्वारा उपयोग की गई भाषा (L2) सरल हो, वे हाव-भाव व चित्रों के साथ बच्चों की घर की भाषा के शब्दों का प्रयोग करें। बच्चों के अनुभवों पर आधारित परिचित संदर्भों का उपयोग करना किसी अपरिचित भाषा को समझने के लिए महत्वपूर्ण होता है।

4.2. मौखिक भाषा विकास पर ध्यान केंद्रित करना

प्रारंभिक कक्षाओं में L2 की समझ विकसित करने हेतु मौखिक भाषा से संबंधित रोचक गतिविधियों जैसे कहानी कथन, बिगबुक पढ़ना आदि पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इन गतिविधियों से बच्चों को L1 और L2, दोनों भाषाओं में संवाद के अवसर मिलते हैं, जो उन्हें स्वयं को धारा-प्रवाह अभिव्यक्त करने में मदद करते हैं।

4.3. 'मिली-जुली' भाषा का प्रयोग सहज रूप से सीखने का चरण है

बच्चे जब कोई अपरिचित भाषा सीख रहे होते हैं, तब वे सहज रूप से 'मिली-जुली' भाषा का उपयोग करते हैं और अपरिचित भाषा के उपयोग में गलतियाँ करते हैं। इसे हतोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि इसे सीखने की प्रक्रिया का एक सहज हिस्सा मानना चाहिए।

4.4. शब्दावली विकास पर ध्यान केंद्रित करना

प्रारंभिक अवस्था में एक अपरिचित भाषा सीखने के लिए उस भाषा के सामान्य शब्दों की न्यूनतम शब्दावली का विकास महत्वपूर्ण होता है। यह मौखिक और लिखित भाषा को समझने में मदद करता है। बच्चे भाषा समझ सकें, इसके लिए वास्तविक जीवन की वस्तुओं या चित्रों वाले फ्लैश कार्ड का उपयोग किया जा सकता है। हाव-भाव के साथ गीत और TPR (Total Physical Response – पूर्णत: शारीरिक प्रतिक्रिया) जैसी गतिविधियाँ L2 की शब्दावली सिखाने में मदद करती हैं। इसके साथ ही L2 सीखने में L1 का रणनीतिक रूप से प्रयोग किया जा सकता है।

4.5. तनाव रहित और सुरक्षित वातावरण प्रदान करना

जिस प्रकार के वातावरण में बच्चे घर में अपनी प्रथम भाषा सीखते हैं, उसी प्रकार का तनाव रहित वातावरण अन्य भाषाएँ सीखने के लिए आवश्यक है। इसका निहितार्थ यह है कि L2 के संदर्भ में बच्चों पर जल्दी बोलने और सीखने के औपचारिक आकलन का दबाव नहीं होना चाहिए। कक्षा का सकारात्मक वातावरण द्वितीय भाषा सीखने में मददगार होता है, ऐसे वातावरण में बच्चे सीखने के लिए प्रेरित होते हैं, उनका आत्म-सम्मान बढ़ता है और वे चिंता से मुक्त रहते हैं।

3. बच्चों के अंग्रेजी सीखने की उनके पालकों की आकांक्षाओं को हम किस प्रकार संबोधित करें?

बहुभाषी दृष्टिकोण अंग्रेजी सहित दो या अधिक भाषाओं और साक्षरता दक्षता के विकास को बढ़ावा देता है। अंग्रेजी को प्राय: 'सत्ता की भाषा' कहा जाता है और 21वीं शताब्दी में अंग्रेजी बोलने/पढ़ने/लिखने वालों के लिए बढ़ते अवसरों के साथ यह महत्वपूर्ण है कि स्कूल बच्चों को अच्छी अंग्रेजी सीखने के लिए तैयार करें। प्राथमिक और उच्च-प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी सीखने में सुधार की चुनौतियाँ इस प्रकार हैं: अंग्रेजी में शिक्षकों की अपर्याप्त दक्षता, दूसरी भाषा के रूप में अंग्रेजी शिक्षण की तैयारी में कमी, शिक्षकों और बच्चों के लिए स्तर अनुसार पाठ्य-सामग्री की कमी और अंग्रेजी का औपचारिक शिक्षण जल्दी प्रारंभ करना, जब बच्चे उसके लिए तैयार ही नहीं होते हैं। प्रभावी रूप से अंग्रेजी सीखने-सिखाने की रणनीति के घटक इस प्रकार हैं:

- कक्षा 1 या 2 से ही सामान्य बातचीत के द्वारा और अर्थपूर्ण रूप से अंग्रेजी के मौखिक उपयोग के सहज अवसर उपलब्ध कराना।

- मौखिक भाषा विकास के महत्व को ध्यान में रखते हुए कक्षा 3 से अंग्रेजी की औपचारिक शिक्षा प्रारंभ करना।
- दूसरी भाषा शिक्षण की उपयुक्त रणनीतियों, जैसे- शब्दावली विकास, ऐसी भाषा का प्रयोग, जिसे बच्चे आसानी से समझ सकें, बच्चों के पढ़ने और समझने के लिए आसान व स्तर अनुरूप पाठ्य-सामग्रियों का उपयोग, गलतियों को सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा समझना और 'मिली-जुली' भाषा के उपयोग को बढ़ावा देना, आदि का उपयोग करना।
- अंग्रेजी सीखने के लिए बच्चों की मजबूत भाषा या L1 का प्रयोग करना।
- प्राथमिक कक्षाओं में, विशेष तौर पर मौखिक अंग्रेजी के विकास की उपलब्धियों की स्पष्ट पहचान करना।

अंग्रेजी भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए देश में एक मजबूत पहल करने की आवश्यकता होगी, जिसमें शिक्षकों के व्यावसायिक विकास का कार्यक्रम भी शामिल होगा। इस कार्य को प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए।

इस अध्याय में हमने जाना

- बच्चों की घर की भाषा को शामिल करने के विभिन्न तरीके कौन-कौन से हैं;
- दूसरी भाषा सीखने-सिखाने के लिए बच्चों के लिए मददगार कुछ अच्छी रणनीतियाँ कौन-सी हैं; और
- बच्चों के अंग्रेजी सीखने की उनके पालकों की आकांक्षाओं को हम किस प्रकार संबोधित करें।

अध्याय–4

बच्चों के घर की भाषाओं को शामिल करने हेतु राज्य स्तरीय नीति और क्रियान्वयन के लिए अगले 12 महीनों में की जाने वाली पहल के कुछ सुझाव

1. बच्चों के घर की भाषाओं को शिक्षण प्रक्रियाओं में शामिल करने के लिए नीतिगत पहल के कुछ उदाहरण क्या हो सकते हैं?

1.1. बच्चों की भाषाओं को पाठ्यचर्या में और औपचारिक रूप से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में प्रयोग पर सहमति बनाना

1.2. प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में घर की भाषा सीखने–सिखाने का माध्यम होनी चाहिए

1.3. बहुभाषिक परिस्थिति (अलग–अलग भाषाओं के लिए) के लिए भाषा और साक्षरता के अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) परिभाषित करना

1.4. बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान कार्यक्रम की योजना में बच्चों के घर की भाषा के प्रयोग का ध्यान रखा जाना चाहिए

1.5. कक्षा–3 या उसके आगे तक अंग्रेजी का प्रयोग शिक्षा के माध्यम के रूप में नहीं किया जाना चाहिए

1.6. शिक्षकों की तैनाती और विशिष्ट भाषाओं के लिए शिक्षकों की भर्ती

1.7. शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में बहुभाषी शिक्षा पर ध्यान देना

आइए, अब इन्हें एक–एक कर विस्तार से समझते हैं:

1.1. बच्चों की भाषाओं को पाठ्यचर्या में और औपचारिक रूप से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में प्रयोग पर सहमति बनाना

राज्य स्तर पर इस तरह की सहमति (पूरी शिक्षा व्यवस्था के अन्दर) बनाना एक पहला कदम है। इसके पश्चात राज्य स्तर पर एक नीति अथवा कुछ सिद्धांतों को अपनाया जा सकता है, जो बहुभाषी शिक्षा की रणनीतियों की योजना बनाने का मार्गदर्शन कर सकें।

1.2. प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में घर की भाषा सीखने–सिखाने का माध्यम होनी चाहिए

कई बार शाला–पूर्व पाठ्यचर्या इस विषय पर सीधे तौर पर कुछ नहीं कहती है। शाला–पूर्व शिक्षक/कार्यकर्ता प्राय: स्थानीय होते हैं और बच्चों की भाषा का प्रयोग करते हैं, जबकि शिक्षण सामग्री और प्रशिक्षण आमतौर पर अपरिचित भाषा में होते हैं। इससे उन्हें यह संदेश मिलता है कि शिक्षण के दौरान इस राज्य की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। अधिक स्पष्ट दिशा–निर्देश प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में L1 के अधिकतम प्रयोग का समर्थन कर सकते हैं।

1.3. बहुभाषिक परिस्थिति (अलग-अलग भाषाओं के लिए) के लिए भाषा और साक्षरता के अधिगम प्रतिफल (लर्निंग आउटकम) परिभाषित करना

प्रारंभिक कक्षाओं में, जहाँ घर की भाषा और स्कूल की भाषा में अंतर होता है, एक से अधिक भाषाओं के लिए प्रतिफल परिभाषित करना महत्वपूर्ण होता है। जैसे- बच्चे कक्षा-2 तक अपरिचित भाषा (L2) में शायद धाराप्रवाह रूप से पढ़ना नहीं सीख सकें। भाषायी परिस्थिति के अनुसार बच्चों द्वारा दूसरी भाषा में बुनियादी साक्षरता के प्रतिफलों को प्राप्त करने की संभावना को कक्षा-3 या उसके आगे तक विलंबित किया जा सकता है।

1.4. बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान कार्यक्रम की योजना में बच्चों के घर की भाषा के प्रयोग का ध्यान रखा जाना चाहिए

बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN) के कौशल विकसित करने के लिए बच्चों की भाषा से प्रारंभ करना, घर की व स्कूल की भाषा में मौखिक भाषा विकास के साथ द्वितीय भाषा शिक्षण की उपयुक्त विधियों पर जोर दिया जाना चाहिए। शुरुआत में बच्चों की भाषा का प्रयोग आवश्यक होगा, क्योंकि इसी भाषा के सहारे 'उच्च स्तरीय समझ' विकसित हो सकती है।

1.5. कक्षा-3 या उसके आगे तक अंग्रेजी का प्रयोग शिक्षा के माध्यम के रूप में नहीं किया जाना चाहिए

अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने से पहले कई वर्षों तक उसे एक विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। अंग्रेजी को कक्षा-3 (या उसके बाद) से एक औपचारिक विषय के रूप में पढ़ाना उचित होगा। कक्षा-3 में औपचारिक विषय के रूप में पढ़ाने से पहले भी अंग्रेजी में मौखिक विकास अच्छा करवाया जा सकता है। यह नीति प्राइवेट स्कूलों के लिए भी लागू की जानी चाहिए। व्यापक सहमति बनाए बिना इस मुद्दे को अमल में लाना एक मुश्किल काम होगा। कई राज्य अंग्रेजी माध्यम के नए स्कूल खोल रहे हैं या पूर्व में संचालित स्कूलों को अंग्रेजी माध्यम में बदल रहे हैं। साथ ही वे इन्हें विशिष्ट दर्जा भी दे रहे हैं। यह एक समान और गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्राप्ति के उद्देश्यों के लिए हानिकारक होगा। हाँ, यह आवश्यक है कि अंग्रेजी के शिक्षण को प्रभावी बनाना बहुत जरूरी है और इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण व अन्य घटकों को सुदृढ़ बनाना होगा।

1.6. शिक्षकों की तैनाती और विशिष्ट भाषाओं के लिए शिक्षकों की भर्ती

घर की भाषाओं पर आधारित तरीकों के प्रयोग के लिए ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता होती है, जिनमें बच्चों की घर की भाषाओं के साथ द्विभाषी/बहुभाषी दक्षताएँ हों। इस हेतु अन्य क्षेत्रों में कार्यरत विशिष्ट भाषा पृष्ठभूमि (जिनको जानने वाले शिक्षकों की संख्या कम हो) के शिक्षकों का स्थानांतरण किया जा सकता है। साथ ही नए शिक्षकों की भर्ती के समय विशिष्ट भाषाओं के शिक्षकों की आवश्यकता पर विचार किया जाना चाहिए। इसके लिए राज्य-स्तरीय शिक्षक भर्ती प्रक्रिया में चिह्नित भाषाओं के लिए 'भाषायी कोटा' की आवश्यकता होगी। ऐसे स्कूलों/पंचायतों को चिह्नित करने के लिए 'भाषायी सर्वेक्षण' की भी आवश्यकता होगी।

कुछ पिछड़ी जनजातियों और भाषायी समूहों में स्कूल या कॉलेज के ऐसे स्नातक नहीं होते हैं, जो एक शिक्षक के रूप में चयन की न्यूनतम योग्यता पूरी करते हैं। इन क्षेत्रों में सरकार आवश्यक योग्यता प्राप्त करने के लिए युवाओं को सहयोग कर सकती है और स्थानीय स्कूलों में शिक्षक बनने के लिए कुछ वर्षों तक उन्हें प्रशिक्षित कर सकती है। यह उस समुदाय के सशक्तिकरण का एक मजबूत संदेश भी होगा।

1.7. शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में बहुभाषी शिक्षा पर ध्यान देना

चित्र 5: एस.सी.ई.आर.टी रायपुर, छत्तीसगढ़ में बहुभाषी शिक्षा के लाभ पर अपने विचार व्यक्त करते एक शिक्षक

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के (सेवापूर्व और सेवाकालीन) कार्यक्रमों में भाषायी और सांस्कृतिक विविधता, बच्चों की भाषाओं और संस्कृति, बच्चों के घर की भाषा का प्रयोग और द्विभाषी/बहुभाषी शिक्षा की रणनीतियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसके लिए SCERT, DIET जैसी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं और राज्य एवं जिला स्रोत समूहों में शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यापक तैयारी की आवश्यकता होगी, जैसा कि निपुण भारत के दिशा–निर्देशों में बताया गया है।

2. क्रियान्वयन की कुछ अल्पकालिक प्राथमिकताएँ क्या हैं?

2.1. उपयुक्त बहुभाषी कार्यक्रमों की योजना बनाने के लिए भाषायी मानचित्रण की मदद से विविध भाषायी परिस्थितियों की पहचान करना?

2.2. व्यापक बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रमों को बनाने और उनके क्रियान्वयन को प्रोत्साहित करना एवं उनका समर्थन करना

2.3. घर की भाषाओं और अन्य भाषाओं में द्विभाषिक बाल–साहित्य प्रकाशित करना

2.4. शिक्षा व्यवस्था में बहुभाषी शिक्षा के लिए जागरूकता पैदा करना

2.5. स्थानीय भाषा के प्रयोग की शुरुआत मौखिक रूप से करना

2.6. एससीईआरटी में राज्य स्रोत समूह और भाषा इकाई का गठन करना

2.7. प्राथमिक स्तर पर एक विषय के रूप में अंग्रेजी शिक्षण को मजबूत बनाना

2.1. उपयुक्त कार्यक्रमों की योजना बनाने के लिए भाषायी मानचित्रण की मदद से विविध भाषायी परिस्थितियों की पहचान करना

निपुण भारत के दिशा-निर्देशों में सुझाए गए प्रमुख कदमों में से एक प्रत्येक राज्य/केंद्र शासित प्रदेश की स्थानीय भाषायी स्थिति का मानचित्रण है – 'सीखने के हस्तक्षेप को अधिक प्रभावी बनाने के लिए स्थानीय रूप से बोली जाने वाली भाषाओं का उस भाषा को बोलने वाले शिक्षकों के साथ मानचित्रण करें।' नीचे उदाहरण के लिए एक भाषायी सर्वेक्षण प्रपत्र दिया गया है। आप इस प्रकार के प्रपत्र को अपने स्तर पर भी तैयार कर सकते हैं:

II. 'शिक्षण का माध्यम' की भाषा को समझने और बोलने की क्षमता

विद्यालय में भाषा विषयों (हिंदी और अंग्रेजी) को छोड़कर अन्य विषयों के शिक्षण के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा, जो कि राज्य द्वारा निर्धारित पाठ्यपुस्तकों और परीक्षा की भाषा होती है, उस भाषा को 'शिक्षण का माध्यम' कहते हैं।

9. नीचे दी गई सूची में से, आपके विद्यालय में 'शिक्षण के माध्यम' के रूप में प्रयोग की जाने वाली भाषा का चयन करें।

- भाषा चुनें -

10. शिक्षण के माध्यम के रूप में चुनी गई भाषा को समझने की क्षमता के लिए बच्चों को 1-3 तक के पैमाने पर रेटिंग दें।

○ 1 (सीमित क्षमता) ○ 2 (संतोषजनक क्षमता) ○ 3 (अच्छी क्षमता)

11. शिक्षण के माध्यम के रूप में चुनी गई भाषा को बोलने की क्षमता के लिए बच्चों को 1-3 तक के पैमाने पर रेटिंग दें।

○ 1 (सीमित क्षमता) ○ 2 (संतोषजनक क्षमता) ○ 3 (अच्छी क्षमता)

III. घर की भाषा-1 और उस भाषा को समझने और बोलने की शिक्षक की क्षमता

घर की भाषा-1 का अर्थ है, वह भाषा जो कक्षा के अधिकांश बच्चों के घर की भाषा है।

12. किसी एक भाषा का चयन कीजिए, जो आपकी कक्षा के अधिकतम बच्चों के घर की भाषा है।

-भाषा चुनें -

13. प्रश्न-12 में चयन की गई भाषा, आपकी कक्षा में कुल कितने बच्चों के 'घर की भाषा' है।

1 से 150 के बीच दर्ज करें

14. प्रश्न-12 में चयन की गई 'घर की भाषा-1' को समझने की क्षमता के लिए स्वयं (शिक्षक) को 1 से 3 तक के पैमाने पर रेटिंग दीजिए।

○ 1 (सीमित क्षमता) ○ 2 (संतोषजनक क्षमता) ○ 3 (अच्छी क्षमता)

15. प्रश्न-12 में चयन की गई 'घर की भाषा' को बोलने की क्षमता के लिए स्वयं (शिक्षक) को 1 से 3 तक के पैमाने पर रेटिंग दीजिए।

○ 1 (सीमित क्षमता) ○ 2 (संतोषजनक क्षमता) ○ 3 (अच्छी क्षमता)

IV. समुदाय के संपर्क की भाषा

'समुदाय के संपर्क की भाषा' एक ऐसी भाषा है, जो घर के बाहर बोली जाती है। यह समुदाय में व्यापक रूप से आपसी बोलचाल के लिए इस्तेमाल की जाती है।

29. क्या समुदाय की कोई 'समुदाय के संपर्क की भाषा' है?

Yes No

30. यदि हाँ, तो समुदाय में उपयोग की जाने वाली 'समुदाय के संपर्क की भाषा' का चयन करें।

-भाषा चुनें-

31. 'समुदाय के संपर्क की भाषा' को समझने की अधिकांश बच्चों की क्षमता को 1-3 के पैमाने पर रेटिंग दीजिए।

○ 1 (सीमित क्षमता) ○ 2 (संतोषजनक क्षमता) ○ 3 (अच्छी क्षमता)

32. 'समुदाय के संपर्क की भाषा' को बोलने की अधिकांश बच्चों की क्षमता को 1-3 के पैमाने पर रेटिंग दीजिए।

○ 1 (सीमित क्षमता) ○ 2 (संतोषजनक क्षमता) ○ 3 (अच्छी क्षमता)

चित्र 6: भाषायी सर्वेक्षण प्रपत्र का नमूना

इस प्रकार के भाषायी मानचित्रण से हम समझ सकते हैं कि-

- किसी स्कूल में 'शिक्षा का माध्यम' कौन-सी भाषा है;
- किसी स्कूल में बच्चों के घर की भाषा (एँ) कौन-कौन सी हैं;
- उस स्कूल में बच्चों के घर की भाषा (ओं) को समझने की शिक्षक की दक्षता क्या है;
- क्या उस क्षेत्र विशेष में कोई लिंक (संपर्क) भाषा है और बच्चे उसे समझते हैं?
- किसी कक्षा/क्षेत्र की भाषायी परिस्थिति कैसी है?, इत्यादि।

ऐसे भाषायी मानचित्रण जो आँकड़े प्रदान करते हैं, वे घर की भाषा के प्रयोग-संबंधी निर्णय लेने का आधार बन सकते हैं। भाषायी मानचित्रण के लिए एक सरल उपकरण का उपयोग किया जाना महत्वपूर्ण होता है। इस उपकरण का उपयोग दाखिले के समय बच्चे की भाषा-संबंधी दक्षता और अन्य बातों को समझने के लिए व्यापक रूप से किया जा सकता है। भाषायी-मानचित्रण का कार्य ऐसे क्षेत्रों से प्रारंभ किया जा सकता है, जहाँ घर की भाषा और स्कूल की भाषा में अंतर है।

2.2. व्यापक बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रमों को बनाने और उनके क्रियान्वयन को प्रोत्साहित करना और उनका समर्थन करना

विभिन्न भाषा परिस्थितियों में व्यापक बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रमों को लागू करना महत्वपूर्ण होता है। प्रदर्शन के उद्देश्य से कुछ कार्यक्रम लिए जा सकते हैं, जिनमें नीचे दिए कार्यक्रम शामिल हो सकते हैं:

a) मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम: एक दूरस्थ आदिवासी क्षेत्र जैसे गुजरात के छोटा उदयपुर जिले में राठवी भाषा प्रचलित है, जहाँ बच्चों की L1 को प्राथमिक स्कूल के पहले 4-5 वर्षों में शिक्षा के माध्यम के रूप में

प्रयोग किया जा सकता है। इस दौरान बच्चे राज्य की आधिकारिक भाषा (L2) सीखते हैं। कक्षा 4 या 5 तक शिक्षा का माध्यम L2 को बनाया जा सकता है। इन परिस्थितियों में शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग की जाने वाली भाषा L1 और उसमें लेखन प्रणाली (यदि आवश्यक हो) के विकास, पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों के विकास, शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास, सतत अकादमिक सहयोग, शाला–समुदाय संबंध स्थापित करने और द्विभाषी शिक्षकों की उपलब्धता की आवश्यकता होती है। 21 जनजातीय भाषाओं का ओडिशा का बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम देश के अन्य हिस्सों के लिए महत्वपूर्ण सीख देता है। कुछ कार्यक्रमों को पहले छोटे स्तर पर लागू किया जा सकता है और फिर उन्हें चरणबद्ध तरीके के आगे बढ़ाया जा सकता है।

b) L2 शिक्षा का माध्यम रहती है और इसके साथ L1 का व्यापक और रणनीतिक रूप से उपयोग किया जाता है: इन कार्यक्रमों को बनाना और बड़े स्तर पर लागू करना आसान होता है। इनके लिए बहुभाषी जागरूकता, L1 में बच्चों की सामग्री, बच्चों की भाषाओं के व्यवस्थित उपयोग के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण और अकादमिक सहयोग और दूसरी अपरिचित भाषा सीखने की प्रभावी रणनीतियों की आवश्यकता होती है।

c) एक ही कक्षा में दो या अधिक प्रथम भाषा के बच्चे: ऐसे स्कूलों के लिए मार्गदर्शक (पायलट) कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता है, जहाँ एक ही कक्षा में दो या दो से अधिक घर की भाषाएँ बोलने वाले बच्चे होते हैं क्योंकि देश में या अन्य जगहों पर इन परिस्थितियों का कम अनुभव उपलब्ध है।

सामुदायिक सहभागिता

कार्यक्रम के प्रारंभिक चरण में सामुदायिक सहभागिता अनिवार्य है। इस हेतु पालकों, समुदाय के मुखिया, सामाजिक–सांस्कृतिक और भाषायी संगठनों के प्रतिनिधियों और स्थानीय समुदाय के जनप्रतिनिधियों से संवाद किया जाता है। समुदाय को यह समझाने में समय लगता है कि इस तरीके से उनके बच्चे प्रभावशाली भाषा सहित सभी विषयों में बेहतर तरीके से सीख सकते हैं। यह कार्य तब और भी आसानी से हो जाता है, जब समुदाय में अपनी संस्कृति और भाषा के प्रति पहचान और गर्व की एक मजबूत भावना होती है।

2.3. घर की भाषाओं और अन्य भाषाओं में द्विभाषिक बाल–साहित्य प्रकाशित करना

प्राथमिक स्कूलों में बच्चों के विकास स्तर के अनुरूप, घर की अप्रभावशाली भाषाओं और अन्य भाषाओं में पठन सामग्री और पुस्तकों की कमी एक बड़ी बाधा है। गुणवत्तायुक्त पठन सामग्रियों की कमी को संबोधित कर इसे दूर करना महत्वपूर्ण है। बच्चों के लिए अप्रभावशाली भाषाओं में या द्विभाषी उच्च–गुणवत्तायुक्त कहानी की पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए सरकार निजी क्षेत्र को बढ़ावा दे सकती है और उन्हें प्रोत्साहित कर सकती है। स्थानीय भाषाओं में बनी इस प्रकार की सामग्रियाँ स्थानीय संस्कृति और बच्चों के संदर्भों पर आधारित होनी चाहिए। इन्हें केवल अन्य भाषाओं से अनुवाद नहीं किया जाना चाहिए।

2.4. शिक्षा व्यवस्था में बहुभाषी शिक्षा के लिए जागरूकता पैदा करना

विकासखंड और संकुल स्तर के स्रोत व्यक्तियों और शैक्षिक प्रशासकों के लिए छोटे–छोटे कोर्स बनाए जा सकते हैं, जो स्थानीय भाषाओं, संस्कृति और बहुभाषी शिक्षा से संबंधित बुनियादी अवधारणाओं को संबोधित करने में मदद कर सकते हैं। इन्हें ऑनलाइन और ऑफलाइन घटकों के साथ मिले–जुले रूप (blended mode) में लागू किया जा सकता है। शिक्षा मंत्रालय (MoE) घर की भाषाओं के प्रयोग पर बुनियादी जागरूकता कोर्स विकसित करने का नेतृत्व

कर सकता है। शिक्षा मंत्रालय द्विभाषी और बहुभाषी शिक्षा पर भारत में और भारत के बाहर किए गए शोध और अच्छे कार्यों को साझा करने और राज्यों द्वारा एक-दूसरे से सीखने की व्यवस्था भी कर सकता है।

2.5. स्थानीय भाषा के प्रयोग की शुरुआत मौखिक रूप से करें

जहाँ भी शिक्षक स्थानीय भाषा जानते हैं, उन्हें सभी प्रकार के मौखिक कार्यों और दूसरी भाषा सीखने में मदद के लिए बच्चों के घर की भाषा के प्रयोग की सरल रणनीतियों पर प्रशिक्षित किया जा सकता है। यह बच्चों की भागीदारी और दूसरी भाषा की उनकी समझ बढ़ाने में मदद करता है। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में औपचारिक रूप से घर की भाषा के प्रयोग का यह पहला चरण हो सकता है।

2.6. एससीईआरटी में राज्य स्रोत समूह और बहुभाषा इकाई का गठन

इन स्रोत व्यक्तियों के लिए प्रारंभिक स्तर के उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। इसके बाद ये समूह अलग-अलग MLE मॉडल के आधार पर कार्यक्रम की योजना और संरचना बनाने का कार्य कर सकते हैं।

2.7. प्राथमिक स्तर पर एक विषय के रूप में अंग्रेजी शिक्षण को मजबूत बनाना

पालकों की ऊँची आकांक्षाएँ हैं कि उनके बच्चे अच्छी तरह से अंग्रेजी सीखें। प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी, विशेष रूप से बोलने वाली अंग्रेजी के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने से शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी के विलंबित प्रयोग की आवश्यकता को मदद मिलेगी। इसके लिए शिक्षकों की अंग्रेजी में स्वयं की दक्षता एवं अंग्रेजी पढ़ाने के कौशलों को, जिसमें बच्चों की परिचित भाषाओं की मदद से दूसरी भाषा के शिक्षण की रणनीतियाँ शामिल हैं, बढ़ाने की आवश्यकता है। यह एक बहुत बड़ी आवश्यकता है और राज्यों को प्राथमिकता पर तकनीकी संस्थाओं के साथ मिलकर अंग्रेजी शिक्षा को बेहतर बनाने के कार्यक्रमों पर काम करना चाहिए।

इस अध्याय में हमने जाना

- बच्चों के घर की भाषाओं को शिक्षण प्रक्रियाओं में शामिल करने के लिए नीतिगत पहल के कुछ उदाहरण क्या हो सकते हैं; और
- क्रियान्वयन की कुछ अल्पकालिक प्राथमिकताएँ क्या हैं।

अध्याय-5

बहुभाषी शिक्षा की तैयारी के लिए योजना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के लिए बच्चों की परिचित अथवा मातृभाषाओं को बुनियादी और प्राथमिक चरण पर (एक बहुभाषी शिक्षा के ढाँचे में) कैसे सम्मिलित किया जाए? इसके लिए क्या चरण और गतिविधियाँ जरूरी होंगी? बहुभाषी शिक्षण को बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN) मिशन के साथ कैसे समन्वित किया जाए? इसके लिए नीचे एक विस्तृत योजना दी गई है। यह योजना मुख्य रूप से बहुभाषी शिक्षा के उस मॉडल को ध्यान में रखकर बनाई गई है, जिसमें बच्चों की घर की भाषा (L1) का प्रयोग और विकास रणनीतिक रूप से मौखिकता में किया जाता है और राज्य की भाषा (L2) शिक्षा का औपचारिक माध्यम रहती है। आप अपने राज्य की आवश्यकता के अनुसार इस प्रथम- वर्ष की योजना को अनुकूलित कर सकते हैं।

क्र.	गतिविधियाँ	माह-1	माह-2	माह-3	माह-4	माह-5	माह-6	माह-7	माह-8	माह-9	माह-10	माह-11	माह-12
1.	बहुभाषी शिक्षा के बारे में जागरूकता अभियान												
2.	बहुभाषी शिक्षा के लिए जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संसथान (DIET), राज्य संसाधन समूह (SRG) और जिला संसाधन समूहों (DRG) का गठन और उन्मुखीकरण। FLN के लिए बने समूह भी बहुभाषी शिक्षा पर काम कर सकते हैं।												
3.	बहुभाषी शिक्षा के क्रियान्वयन के लिए राज्य की 1-3 वर्ष की विस्तृत योजना एवं बजट बनाना												
4.	पहले वर्ष के लिए योजना और बजट को अंतिम रूप देना												
5.	लक्षित क्षेत्रों में सामान्य भाषायी सर्वेक्षण/मानचित्रण करना												
6.	भाषायी सर्वेक्षण के आधार पर उपयुक्त रणनीतियों का चयन करना												
7.	मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के लिए क्षेत्रों की पहचान करना और इस												

क्र.	गतिविधियाँ	माह-1	माह-2	माह-3	माह-4	माह-5	माह-6	माह-7	माह-8	माह-9	माह-10	माह-11	माह-12
	एप्रोच के लिए रणनीतियाँ और दिशा–निर्देश बनाना												
8.	अन्य स्कूलों (जहाँ L1 को माध्यम नहीं बना सकते) के लिए बहुभाषी शिक्षा के सामान्य दिशा–निर्देश और रणनीतियाँ बनाना												
9.	बहुभाषी शिक्षा के नजरिए से स्कूलों के लिए मॉनिटरिंग प्रक्रिया का विकास करना												
	क्षमता विकास												
10.	कोर्स और कार्यशालाओं द्वारा SRG और DRGs का बहुभाषी शिक्षा पर ऑनलाइन/ऑफलाइन/मिले–जुले रूप में उन्मुखीकरण – इनमें बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के साथ बहुभाषी शिक्षा का एकीकरण, बहुभाषी शिक्षा की मुख्य अवधारणाएँ, उसका शिक्षणशास्त्र, रणनीतियाँ और आकलन आदि शामिल होंगे।												
11.	बहुभाषी शिक्षा पर शिक्षक शिक्षा संस्थानों (DIETs) का उन्मुखीकरण और बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान मिशन के उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ बहुभाषी शिक्षा का एकीकरण												
12.	बहुभाषी शिक्षा को समर्थन देने के लिए ब्लॉक, संकुल स्तर (अकादमिक सहयोगकर्मी और प्रशासकों) का ऑनलाइन/ऑफलाइन/ मिले–जुले रूप में प्रशिक्षण												
13.	बहुभाषी शिक्षा पर शिक्षकों के लिए लघु कोर्स/प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रचना												

क्र.	गतिविधियाँ	माह-1	माह-2	माह-3	माह-4	माह-5	माह-6	माह-7	माह-8	माह-9	माह-10	माह-11	माह-12
14.	डाइट के सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में बहुभाषी परिप्रेक्ष्य जोड़ना												
15.	बहुभाषी शिक्षा के नजरिए से राज्य की पाठ्यचर्या पर आधारित सीखने के प्रतिफलों में बदलाव करना												
16.	स्थानीय भाषाओं में सामग्री निर्माण के विस्तृत दिशानिर्देश बनाना												
	सामग्री निर्माण												
17.	स्थानीय भाषाओं में सामग्री निर्माण हेतु मजबूत टीम का गठन करना												
18.	स्थानीय भाषा में सामग्री निर्माण के लिए विस्तृत योजना बनाना और तैयारी करना (प्रसंगों और सामग्रियों की पहचान करना और रूपरेखा तैयार करना आदि)												
19.	स्थानीय ज्ञान/लोककथाओं और सांस्कृतिक संसाधनों का संग्रह/दस्तावेजीकरण												
20.	पाठ्यचर्या के उद्देश्यों और सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, कक्षा-1, 2, 3, के लिए स्थानीय भाषा के संसाधनों की समीक्षा करना, चुनाव करना और अभ्यास्पुस्तिका, कविता पोस्टर, चित्रचार्ट, बड़ी किताबें आदि बनाना												
21.	बच्चों की भाषा में बनाए टीएलएम को अंतिम रूप देना, उनका मुद्रण और वितरण करना												
22.	टीएलएम के उचित उपयोग के लिए स्थानीय भाषाओं में दिशानिर्देश बनाना												

क्र.	गतिविधियाँ	माह-1	माह-2	माह-3	माह-4	माह-5	माह-6	माह-7	माह-8	माह-9	माह-10	माह-11	माह-12
	क्रियान्वयन												
23.	स्कूलों में बहुभाषी प्राइमर /शिक्षक संदर्शिका/हैंडबुक/टीएलएम का वितरण												
24.	समय-समय पर ऑनलाइन/ ऑफलाइन /मिले-जुले रूप में रिफ्रेशर प्रशिक्षण और बहुभाषी शिक्षा पर उन्मुखीकरण (बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए)												
25.	बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन की सफलता के लिए बहुभाषी शिक्षा के नजरिए से स्कूलों की लगातार मॉनिटरिंग और समीक्षा												
26.	अनुभव साझा करने हेतु जिला/ब्लॉक/ संकुल स्तर पर नियमित बैठकें आयोजित करना												
27.	शाला-समुदाय संबंध मजबूत करने हेतु गतिविधियाँ – सामुदायिक संग्रहालयों की स्थापना, मौखिक कथाओं का दस्तावेजीकरण, गाँव के इतिहास का दस्तावेजीकरण, सामुदायिक मेला												
28.	भाषायी सर्वेक्षण के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षकों की भर्ती/तैनाती या दोनों												
	दस्तावेजीकरण/मूल्यांकन												
29.	राज्य स्तर पर बहुभाषी शिक्षा के लिए किए गए अलग-अलग प्रयास, सफलताओं और चुनौतियों की प्रक्रियाओं का विस्तार से दस्तावेजीकरण												
30.	सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं और बच्चों के अधिगम स्तर का मूल्यांकन												

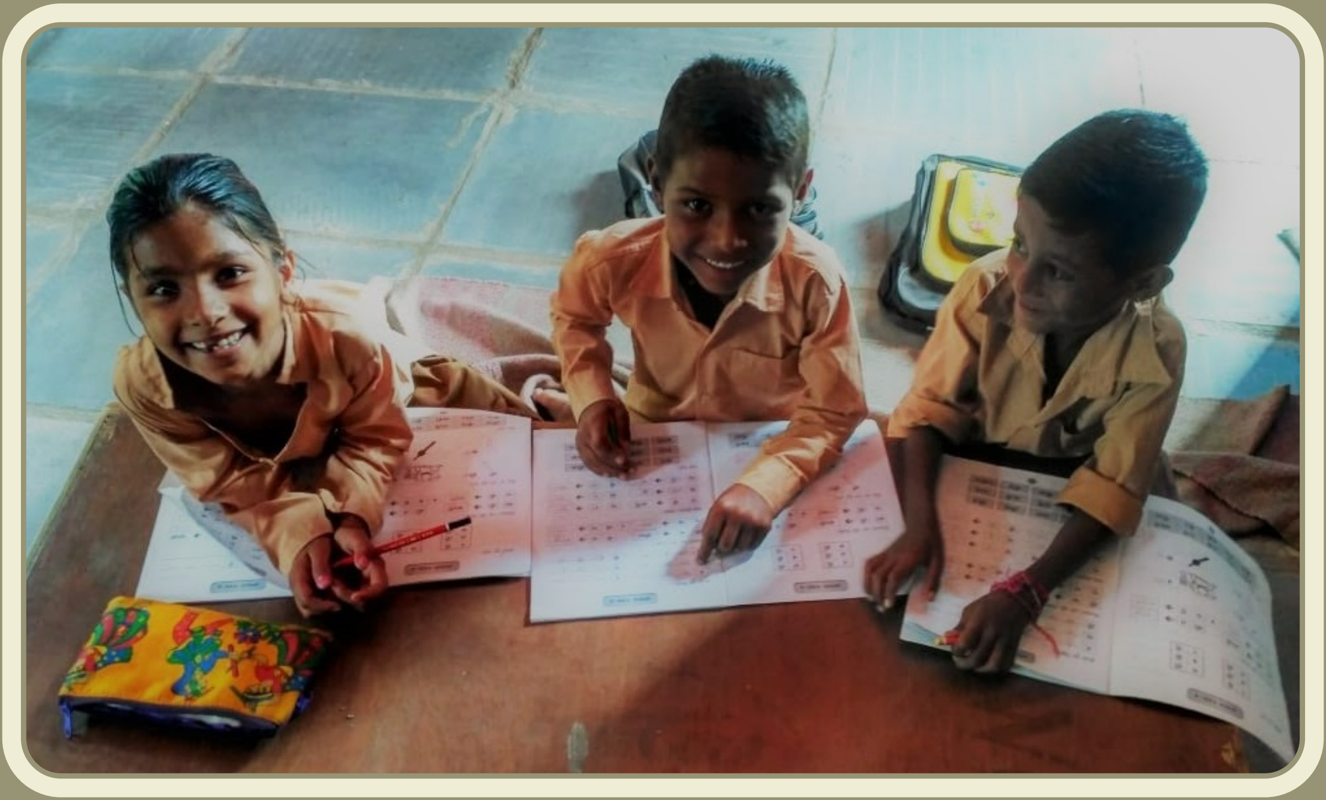

सम्पर्क करें:
लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन
ऑफिस पता: डी-26, एन.डी.एस.ई. पार्ट-2, फ्रंट ग्राउंड फ्लोर,
नई दिल्ली-110049 फोन: 011-26106045
वेबसाइट: https://languageandlearningfoundation.org
ई-मेल: info@languageandlearningfoundation.org